शासनसम्राट विजयनेमीसूरिश्वरजी महाराज गुरुभ्यो नम

प्रकरण रत्नाकर मूल.

तपगच्छ पूज्यपाद गुरुणीजी महाराज सौभाग्यश्रीजी
महाराजना शिष्या चपाश्रीजी महाराजना प्रथम शिष्या
दर्शनश्रीजी महाराजना शिष्या लाभश्रीजी
महाराजना सदुपदेशथी



छपावी प्रसिद्ध करनार
महेता नागरदास प्रागजीभाइ
ठे दोशीवाडानी पोळ–अमदावाद



संवत १९९२ विज्या दशमी | सन १९३, | वीर संवत २४६२

श्री वीरविजय प्रिन्टींग प्रसमां मणीलाल छगनलाले
छाप्यु ठे० रतनपोळ सागरना खडकी--अमदावाद

मूल्य अमूल्य

अगाउथी मदद आपनार गृहस्थोना नाम

रुपिया	नाम	ठेकाणु
५०)	शेठ मोहनलाल परसातमदास	पाटण
२५)	बेन हरकोर	खभात
२५)	बेन समरत केशवलाल	गुसापारेखनी पोळ अमदावाद
११)	बेन शुभी	,,
११)	शेठाणी बाइ मणी सुरदास शेठनी पोळ	,,
११)	बाइ धीरज वाडीलाल ,,	,,
११)	बेन लक्ष्मी	,
११)	गगाबेन वाडीलाल राजामहेतानी पोळ	
१०)	बेन मेना शाहपुर	,
१०)	जासुदबेन धोळीदास काकाबळीआनी पोळ	,,
१०)	बेन धिज्या सुरदास शेठनी पोळ	,
१०)	बाइ दीवाळी	खभात
५)	शाह बाते सुरदास शेठनी पोळ	अमदावाद
५)	बेन मणा ,,	,,
५)	बेन महालक्ष्मी ,,	,
५)	बेन चचळ ,,	,
५)	बेन जीवी ,,	,,
५)	बेन रुखी रतनचद ,,	,
५)	बेन सीना ,	,,
५)	बेन शान्ता ,,	,,
५)	बाइ चचळ ,,	,,
५)	बेन चपा रुपासुरचदनी पोळ	,,
५)	बेन जासुद शामळानी पोळ	,,
५)	बेन जासुद गुसापारेखनी पोळ	,,
५)	महेता मणीलाल वेलजीभाइ	साणद
५)	बेन धमु	दहेगाम
२६५)		

अनुक्रमणिका



जाहेर

अमारे त्यांथी जैनधर्मनी हस्तलिखित प्रतो तथा छापेली प्रत आकारनी संस्कृत, प्राकृत, मागधी पोथीओ अने संस्कृत, हिंदी तथा गुजराती भाषाना दरेक जातना पुस्तको मळी शकशे

तथा

उन, चरवळा, कटासणा, चापडा नाकारवाळीओ, सिद्धचक्रजीना गटा तथा सामायिक करवानी ४८ मीनीटनी तथा ६० मीनीटनी घडीओ तथा रंगीन रेशम तथा तीर्थोना रंगीन नकशाओ तथा फोटाओ विगेरे छुटक तथा जथ्थाबंध मळी शकशे

लखो

महेता नागरदास प्रागजीभाइ

ठे. डोशीवाडानो पोळ, अमदावाद

तथा

संघवी मुळजीभाइ झवेरचंद

जैन बुकसेलर, पालीताणा

श्री शत्रुंजय लघुकल्प.

अइमुत्तय केवलिणा, कहिअ सेत्तुज तित्थ-माहप्प ॥ नारयरिसिस्स पुरओ, तं निसुणह भावओ भविआ ॥ १ ॥ सेत्तुजे पुण्डरिओ, सिद्धो मुणिकोडीपञ्चसजुत्तो । चित्तस्स पुण्णिमाए, सो भण्णइ तेण पुण्डरिओ ॥ २ ॥ नमिविनमिरायाणो, सिद्धा कोडिहि दोहि साहूण । तह दविडवाली खिल्ला, निव्वुआ दसय कोडिओ ॥ ३ ॥ पज्जुन्न सव पमुहा, अद्भुट्ठाओ कुमारकोडीओ । तह पंडवा वि पञ्च य, सिद्धिगया नारयरिसी य ॥४॥ थावच्चा सुय सेलगा य, मुणिणो वि तह राम-मुणि । भरहो दसरहपुत्तो, सिद्धा वंदामि सेत्तुजे ॥ ५ ॥ अन्नेवि खवियमोहा, उसभाइ विसाल-वससभूआ । जे सिद्धा सेत्तुजे, त नमह मुणी असखिज्जा ॥ ६ ॥ पन्नास जोयणाई, आसी सेत्तुजे वित्थरो मूले । दस जोयण सिहरतले, उच्चत्त

जोयणा अट्ठ ॥ ७ ॥ ज लहइ अन्न तित्थे, उग्गेण तवेण बम्भचेरेण । त लहइ पयत्तेण, सेत्तुंज–गिरिम्मि निवसते ॥८॥ ज कोडीए पुन्न, कामिय-आहारभोइआ जे उ । त लहइ तत्थ पुन्नं, एगोववासेण सेत्तुजे ॥ ९ ॥ ज किंचि नाम तित्थ, सग्गे पायाले माणुसे लोए । त सव्वमेव दिट्ठ, पुण्डरिए वदिए सते ॥ १० ॥ पडिलाभते सघ, दिट्ठमदिट्ठे य साहू सेत्तजे । कोडिगुण च अदिट्ठे, दिट्ठे य अणतय होइ ॥ ११ ॥ केवलनाणुप्पत्ती, निव्वाण आसि जत्थ साहूण । पुण्डरिए वदित्ता, सव्वे ते वदिया तत्थ ॥ १२ ॥ अट्ठावय–समेए, पावा–चपाइ उज्जितनगे य । वदित्ता पुन्नफल, सयगुण तपि पुण्डरिए ॥ १३ ॥ पूआकरणे पुन्न, एगगुण सयगुण च पडिमाए । जिणभवणेण सहस्स, णतगुण पालणे होइ ॥ १४ ॥ पडिम चेइहर वा, सित्तुजगिरिस्स मत्थए कुणइ । भुत्तूण भरहवास, वसइ सग्गेण निरुवसग्गे ॥१५॥ नवकार १ पोरसीए २, पुरिमड्ढे ३ गासण ४ च आयाम ५ । पुंडरिय

च सरंतो, फलकखी कुणइ अजत्तह ६ ॥ १६ ॥
छट्टट्टमदसमदुवालसाण, मासद्धमासखमणाणं ।
तिगरणसुद्धो लहइ, सित्तुज सजरतो अ ॥ १७ ॥
छट्टेण भत्तेण, अप्पाणेण तु सत्त जत्ताइ । जो
कुणइ सेत्तुजे, तइयभवे लहइ सो मुक्ख॥ १८ ॥
अज्जवि दीसइ लोए, भत्त चइऊण पुंडरीयनगे।
सग्गे सुहेण वच्चइ, सीलविहुणो वि होऊण ॥ १९॥
छत्त झय पडाग, चामर भिंगाण थालदाणेण ।
विज्जाहरो अ हवइ, तह चक्की होइ रहदाणा
॥ २० ॥ दस वीस तीस चत्ताल—पन्नासा पुप्फदा-
मदाणेण । लहइचउत्थछट्टट्टमदसम दुवालस फलाइ
॥ २१ ॥ धूवे पक्खुववासो, मासक्कमण, कप्पूरधूव-
म्मि । कित्तियमासक्कमण साहु पडिलाभिए
लहइ ॥ २२ ॥ नवि त सुवन्नभूमी—भूसणदाणेण
अन्नतित्थेसु । ज पावइ पुन्नफल, पूआ न्हवणेण
सित्तुजे ॥ २३ ॥ कतार चोर सावय—समुद दारिद्द
रोग रिउ रुद्दा । मुच्चति अविग्घेण, जे सेत्तुंज धरंति
मणे ॥ २४ ॥ सारावली पयन्नग—गाहाउ सूअहरेण

न्नणिआउं । जो पढइ गुणइ निसुणइ, सो लहइ सित्तुजजत्तफल ॥ २५ ॥

श्रीरत्नशेखरसूरिकृत—

श्रीलघुक्षेत्रसमासप्रकरणम्

वीरं जयसेहरपय–पइट्ठिअं पणमिऊण सु–(स) गुरु च । मंदु त्ति ससरणट्ठा, खित्तविआराऽणुमुंछामि ॥१॥ तिरिएगरज्जुखित्ते, असखदीवोदहीउ ते सव्वे । उद्धारपलिअपणवीस–कोडिकोडीसमयतुल्ला ॥२॥ कुरुसगदिणाविअगुल–रोमे सगवारविहिअअडखडे । बावन्नसय सहस्सा, सगणउई वीसलक्खाणू ॥३॥ ते थूला पल्ले वि हु, सखिज्जा चेव हुति सव्वेऽवि । ते इक्किक असखे, सुहुमे खडे पकप्पेह ॥४॥ सुहमाणुणिचिअउस्से–हगुलचउकोसपल्लिघणवट्टे । पइसमयमणुग्गहनि–ट्ठिअम्मि उद्धारपलिउ त्ति ॥५॥ पढमो जबू

बीउं, घायइसंडो अ पुक्खरो तइउं । वारुणिवरो चउत्थो, खीरवरो पंचमो दीवो ॥६॥ घयवरदीवो छट्ठो, इक्खुरसो सत्तमो अ अट्ठमउं । नंदीसरो अ अरुणो, णवमो इच्चाइसंखिज्जा ॥७॥ सुपसत्थ-वत्थुणामा, तिपडोआरा तहाऽरुणाईआ । इगणामे-ऽवि असंखा, जाव य सूरावभास त्ति ॥८॥ तत्तो देवे नागे, जक्खे भूए सयंभुरमणेअ । एए पंच वि दीवा, इगेगणामा मुणेअव्वा ॥९॥ पढमे लवणो बीए, कालोदहि सेसएसु सव्वेसु । दीवसमना-मया जा, सयंभुरमणोदही चरमो ॥१०॥ बीउं तइउं चरमो, उदगरसा पढमचउत्थपंचमगा । छट्ठोऽवि सनामरसा, इक्खुरसा सेसजलनिहिणो ॥११॥ जंबुद्दीव पमाण-गुलिजोअणलक्खवट्टवि-क्खंभो । लवणाईआ सेसा, वलयाभा दुगुणदुगुणा य ॥१२॥ वयरामईहिं णिअणिअ-दीवोदहि-मज्झगणिअमूलाहिं । अट्ठुच्चाहिं बारस-चउमूले-उवरिरुंदाहिं ॥१३॥ वित्थारदुगविसेसो, उस्सेहवि-भत्तखउं चउ होइ । इअ चूलागिरिकूडा-तुल्ल-

विक्खम्भकरणाहि ॥१४॥ गाउदुगुच्चाइ तय-दुर्गा-गरुंदाइ पउमवेईए । देसूणदुजोयणवर-वणाई परिमन्थिअसिराहि ॥१५॥ वेईसमेण महया, गव-क्खकडएण सपरित्ताहि । अट्ठारसूणचउजत्त-परहिदारतराहि च ॥१६॥ अट्ठुच्चचउसुवित्थर-दुपामसक्कोसकुड्डदाराहिं । पुव्वाइमहड्ढिअ-देवा-दारविजयाइनामाहि ॥१७॥ णाणामणिमयदेहलि-कवाडपरिघाइदारसोहाहि । जगईहिं ते सव्वे, दीवोदहिणो परिक्खित्ता ॥१८॥ वरतिणतोरण-झयछत्त-वावि-पासायसेलसिलवट्टे । वेइवणे वर-मण्डव-गिहासणेसु रमति सुरा ॥१९॥ इह अहि-गारो जेसिं, सुराण देवीण ताणमुप्पत्ती । णिअ-दीवोदहिणामे, असखइमे सणयरीसु ॥२०॥ जबू-दीवो छहिँ कुल-गिरिहिं सत्तहिँ तहेव वासेहिं । पुव्वावरदीहेहिं, परिछिन्नो ते इमे कमसो ॥२१॥ हिमवसिहरी महहिमव-रुप्पि णिसढो अ णील-वतो अ । वाहिरउ दुदु गिरिणो, उभउ वि

सवेऽवि सवे ॥२२॥ भरहेरवय त्ति दुग, दुग च हेमवयरण्णवयरूव । हरिवासरम्मयदुग, मज्झि विदेहु त्ति सग वासा ॥२३॥ दो दीहा चउ वट्टा, वेअड्ढा खित्तछक्कमज्झम्मि । मेरू विदेहमज्झे, पमाणमित्तो कुलगिरीण ॥२४॥ इगदोचउसयउच्चा, कणगमया कणगरायया कमसो । तवणिज्जसुवेरुलिआ, बहिमज्झब्भिंतरा दो दो ॥२५॥ दुगअडदुतीस अका, लरकगुणा कमेण नउअसयभइआ । मूलोवरि समरूव, वित्थार बिंति जुअलतिगे ॥२६॥ बावण्णहिअ सहसो, बारकला बाहिराण वित्थारो । मज्झिमगाण दसुत्तर–बायालसया दस क्ला य ॥२७॥ अब्भिंतराण दुकला, सोलसहस्सऽडसया सबायला । चउचत्तसहस्स दो सय, दसुत्तरा दस कला सवे ॥२८॥ इगचउसोलसंका, पुव्वुत्तविही अ खित्तजुअलतिगे । वित्थार बिंति तहा, चउसट्ठिंको विदेहस्स ॥२९॥ पच सया छवीसा, छच्च कला खित्तपढमजुअलम्मि । बीए इगवीससया, पणुत्तरा पच य कला य ॥३०॥ चुलसीसय

इगवीसा, इक्ककला तइअगे विदेहि पुणो। तित्ती-ससहस ठसय, चुलसीआ तहा कला चउरो ॥३१॥ पणपन्नसहस सग सय, गुणणउआ णव कला सयलवासा। गिरिखित्तकसमासे, जोअण-लक्खं हवइ पुण्ण ॥३२॥ पण्णासजुअ बाहिर-खित्ते दलिअम्मि दुसय अमतीसा। तिण्णि य कला य एसो, खण्डचउक्कस्स विक्खंभो ॥३३॥ गिरिउवरि सवेइदहा, गिरिचत्ताउ दसगुणा दीहा। दीहत्तअद्धरुदा, सव्वे दसजोअणुव्वेहा ॥३४॥ बहि पउमपुंडरीया, मज्झे ते चेव हुति महपुव्वा। तेगिंछिकेसरीआ, अब्भितरिआ कमेणेसु ॥३५॥ सिरिलच्छी हिरिवुद्धी, धीकित्ती नामियाउ देवीउ। भवणवईउ पलिउ-वमाउ वरकमलणिलयाउ ॥३६॥ जलुवरि कोसदुगुच्च, दहवित्थरपणसयस वित्थार। बाहल्ले वित्थरद्ध, कमलं देवीण मूलिल्लं ॥३७॥ मूले कंदे नाले, तवयरारिट्ठवेरुलिअरूव। जवुणयमज्झतवणी-ज्जबहिअदल रत्तकेसरिअ ॥३८॥ कमलद्धपायपिहुलु च्चकणगमयकण्णिगोवरि

जवण । अद्धेगकोसपिहुदी-हचउदसयचालधणु-दुच ॥३९॥ पच्छिमदिसि विणु धणुपण-सय उच्च ढाइज्जासय पिहुपवेस । दारतिग इह जवणे, मज्झे दहदेविसयणिज्जा ॥४०॥ त मूलकमलरूप्प-माण-कमलाण अरुहिअसएण । परिखित्त तज्जवणे-सुजूसणाइणि देवीण ॥ ४१ ॥ मूलपउमाउ पुव्विं, महयरियाण चउण्ह चउ पउमा । अवराइ सत्त पउमा, अणिआहिवईण सत्तण्ह ॥४२॥ वायव्वाइसु तिसु सुरि-सामण्णसुराण चउसहस पउमा । अट्ठदसबारसहसा, अग्गेआइसु तिपरिसाण ॥४३॥ इअ बीअपरिक्खेवो, तइए चउसु वि दिसासु देवीण । चउ चउ पउमसहस्सा, सोलससहस्सा-ऽऽयरक्खाण ॥४४॥ अब्भिंतरगाइ तिवलए, बत्तीस-चत्ताऽडयाललक्खाइ । इगकोडि वीस लक्खा, सहा वीस सय सव्वे ॥४५॥ पुव्वावरमेरुमुह, दुसु दार-तिग पि सदिसि दहमाणा । असिईभागपमाण, सतोरण णिग्गयणईआ ॥४६॥ जामुत्तरदारदुग, सेसेसु दहेसु ताण मेरुमुहा। सदिसि दहासिअ·

ज्ञागा, तयरूमाणा य वाहिरिया ॥४७॥ गगा सिधू रत्ता, रत्तवई वाहिर णइचउक्क । वहिदह-पुव्वावरदा–रविवर वहइ गिरिसिहरे ॥४८॥ पच सय गतु णिअगा–वत्तणकूमाउ वहिमुह वलइ। पणसयतेवीसेहिं, साहिअतिकलाहि सिहराउ ॥४९॥ णिवडइ मगरमुहोवम–वयरामयजिब्भि-आइवयरतले । णिअगे णिवायकुडे, मुत्तावलि-समप्पवाहेण ॥५०॥ दहदारविवराउं, विवरपणा-सवागजवाउ । जवाउ चउगुण–दीहाउ सव-जिब्भीउ ॥५१॥ कुडतो अडजोअण–पिहुलो जलउवरि कोसदुगमुच्चो । वेइजुउ णइदेवी–दीवो दहदेविसमभवणो ॥५२॥ जोअणसट्ठिपिहुत्ता, सवायछप्पिहुलवेइतिदुवारा । एए दसुड कुडा, एव अण्णे वि णवर ते ॥५३॥ एसि विथारतिग, परुच समदुगुणचउगुणट्ठगुणा । चउसट्ठिसोलच-उदो, कुडा सवेवि इह णवई ॥५४॥ एअ च णइ-चउक्क, कुडाउ वहिदुवारपरिवूढ । सगसहसणइ-समेअ, वेअड्ढगिरि पि भिदेइ ॥५५॥ तत्तो वाहिर-

खित्त–रूमज्झंउं वलइ पुवअवरमुह । णइसत्त-सहससहिअ, जगइतलेण उदहिमेइ ॥५६॥ धुरि कुरुदुवारसमा, पज्जाते दसगुणा य पिहुलत्ते । सव्व महणईउं, विजरपएणासजागुरुा ॥५७॥ पणखित्त-महणईउं, सदारदिसि दहविसुरुगिरिअरू । गतूण सजिव्वीहिं, णिअणिअकुरूसु णिवरुति ॥५८॥ णिअजिब्भिअपिहुलत्ता, पणवीसंसेण मुत्तु मऊगिरि । जाममुहा पुव्वुदहिं, इअरा अवरो-अहिमुर्विति ॥५९॥ हेमवइ रोहिअसा, रोहिआ गगडुगुणपरिवारा । एरएणवए सुवरण–रुप्पकूलाउं ताण समा ॥६०॥ हरिवासे हरिकता, हरिसलिला गगचउगुणणईआ । एसि समा रम्मयए, णरकता णारिकता य ॥६१॥ सीउआ सीआउं, महाविदे-हम्मि तासु पत्तेय । णिवरुइ पणलरुक दुती–ससहस अरुत्तीस णइसलिल ॥६२॥ कुरुणइ चुलसीसहसा, उचेवतरणईउ पइविजय । दो दो महाणईउं, चउदसहस्सा उ पत्तेयं ॥६३॥ अरु-सयरि महणईउं, बारस अतरणईउ सेसाउं ।

परिग्गिरणाई चउद्दस, लक्खा छप्पएण सहस्सा य ॥६४॥ एगारसणवकूडा, कुलगिरिजुअलत्तिगे वि पत्तेअं । ऽऽ छप्पएण चउ चउ, वक्खारेसु त्ति चउसट्ठी ॥६५॥ सोमणसगंधमाइणि, सग सग विज्जुप्पभिमालवंति पुणो । अट्ठट्ठ सयल तीस, अड णवइ अट्ठ करिकूडा ॥६६॥ इअ पणसय-छच सासट्ठि-सड (य) कूडा तेसु दीहरगिरीण । पुव्वणइ मेरुदिसि, अंतसिद्धकूडेसु जिणभवणा ॥६७॥ ते सिरिगिहाउ दोसय-गुणप्पमाणा तहेव तिदुवारा । णवर अड्डीसाहिअ-सयगुणदारप्प-माणमिह ॥६८॥ पणवीस कोससय, समचउरस-विच्छडा दुगुणमुच्चा । पासाया कूडेसु, पणसयउच्चेसु सेसेसु ॥६९॥ बलहरिस्सहहरिकूडा, णंदणवणि मालवंति विज्जुपभे । ईसाणुत्तरदाहिण-दिसासु सहसुच्च कणगमया ॥७०॥ वेअड्ढेसु वि णव णव, कूडा पणवीसकोसउच्चा ते । सव्वे तिसय छडुत्तर, एसु वि पुव्वंति जिणकूडा ॥७१॥ ताणुवरिं चेइ-हरा, दहदेवीभवणतुल्लपरिमाणा । सेसेसु अ

पासाया, अऽेगकोसं पिहुच्चत्ते ॥७२॥ गिरिकरिकूडा उच्च-त्तणाउ समअऽूमूलुवरिरुंदा । रयणमया णवरि विअ-ऽमज्झिमा तिति कणगरूवा ॥७३॥ जंबूणयरययमया, जगइसमा जंबुसामलीकूडा । अहहु तेसु दहदेवी-गिहसमा चारुचेइहरा॥७४॥ तेसि समोसहकूडा, चउतीस चुल्लकुण्डजुअलंतो । जंबूणएसु तेसु अ, वेअड्ढेसु व पासाया ॥७५॥ पचसए पणवीसे कूडा सव्वे वि जंबुदीव-म्मि । ते पत्तेअ वरवण-जुआहि वेईहि परि-क्खित्ता ॥७६॥ छसयरिकूडेसु तहा, चूला चउ-वणतरूसु जिणभवणा । भणिया जंबुद्दीवे, सदेवया सेसठाणेसु ॥७७॥ करिकूडकुण्डदह-कुरुकंचण-यमलसमविअड्ढेसु । जिणभवणविसंवाओ, जो त जाणंति गीअत्था ॥७८॥ पुव्वावरजलहिंता, दसु-च्चदसपिहुलमेहलचउक्का । पणवीसुच्चा पण्णा-सतीसदसजोअणपिहुत्ता ॥७९॥ वेईहिं परिक्खित्ता, सखयरपुरपण्णसट्ठिसेणिदुगा । सदिसिदलोग-पालो-वओगि उवरिल्लमेहलया ॥८०॥ ३८

विहिअन्तरहे–रवया दुदुगुरयुहा य रूप्पमया ।
दो दीहा वेअड्ढा, तहा दुतीस च विजएसु ॥८१॥
णवरं ते विजयता, सरायरपणपएणपुरडुसेणी आ।
एव म्वयरपुराइ, सगतीससयाइ चालाइ ॥८२॥
गिरिविवरदीहाउं, अट्ठुच्चचउपिहुपवेसदाराउं ।
वारसपिहुलाउ अट्ठु–च्चयाउ वेअड्ढ दुगुहाउं
॥८३॥ तम्मज्झडुजोयणअ–तराउ तितिविअराउ
दुणईउं । उम्मग्गनिमग्गाउं, कडगाउ महाणई-
गयाउं ॥८४॥ इह पइभित्ति गुणव–एणमडले
लिहइ चकि दुदुसमुहे ।पणसयधणुइपमाणे, वारे-
गडजोअणुज्जोए ॥८५॥ सा तमिसगुहा जीए,
चक्को पविसेइ मज्झसडतो । उसह अकिअ सो
जी–ए वलइ सा खडगपवाया ॥८६॥ कयमाल–
नट्टमालय–सुराउ वऊइणिवडूसलिलाउ । जा
चक्को ता चिट्ठति, ताउं उग्घडियदाराउं ॥८७॥
वहिखडतो वारस–दीहा नवविछडा अउज्झपुरी।
सा लवणा वेअड्ढा, चउदहिअसय चिगारकला

॥७७॥ चक्किवसणइपवेसे, तिन्नकुग मागहो पज्जासो अ । ताणतो वरदामो, इह सवे विक्कत्तरसय ति ॥७८॥ नरहेरवए ठठअर–यमयावसप्पिणिउस- प्पिणीरूव । परिन्तमइ कालचक्क, कुवालसारसया वि कमा ॥७९॥ सुसमसुसमा य सुसमा, सुसम- कुसमा य कुसमसुसमा य । कुसमा य कुसमकुसमा, वमुक्कमा कुसु वि अरठक्क ॥८१॥ पुव्वुत्तपल्लिसम- सत्त–अणुगगहणा णिट्ठिए हवइ पलिउं । दस- कोमिकोमिपलिए–हि सागरो हाइ कालस्स॥८२॥ सागरचउतिकुकोमा–कोमिमिए अर तिगे नराण कमा । आऊ तिकुगपलिआ, तिकुगकोसा तणुचत्तं ॥८३॥ तिकुइगदिणेहि तुवरि–वयरा- मलमित्तु तेसिमाहारो । पिट्ठकरंमा दोसय, ठप्प- एणा तद्दल च दल ॥८४॥ गुणवएणदिणे तह पनर–पणरअहिए अवच्चपालणया । अवि सयल- जिआ जुअला सुमण सुरूवा य सुरगइआ ॥८५॥ तेसि मत्तग १ जिगा २ तुमिअंगा ३ जोइ ४

५ चित्तंगा ६ । चित्तरसा ७ मणिअंगा ८ गेहा-
गारा ९ अणिअयरका १० ॥ ९६ ॥ पाण १
भायण २ पिछण ३, रविपह ४ दीवपह ५ कुसुम
६ माहारो ७ । भूसण ८ गिह ९ वत्थासण १०,
कप्पदुमा दसविहा दिंति ॥९७॥ मणुआउसम
गयाई, हयाइ चउरसजाइ अट्ठुसा । गोमहिसुट्ट-
खराई, पणस साणाइ दसमसा ॥९८॥ इचाइ तिर-
आण वि, पाय सव्वारएसु सारिछ । तइआरसेसि
कुलगर–णय जिणधम्माइ उप्पत्ती ॥९९॥ काल-
दुगे तिचउत्था–रगेसु एगूणणवइपक्खेसु । सेसि
गएसु सिज्झ–ति हुति पढमतिमजिणिंदा ॥१००॥
बायालसहस्सवरसू–णिगकोडाकोडिअयरमाणाए।
तुरिए नराउ पुव्वा–ण कोडि तणु कोसचउरस
॥१०१॥ वरिसेगवीससहस–प्पमाणपंचमरए सगक-
रचा । तीसहिअसयाउ णरा, तयंति धम्माइ-
आणतो ॥१०२॥ खारग्गिविसाईहिं, हाहाभूआ-
कयाइपुहवीए । खगबीय विअड्ढाइसु, णराइबीयं

विलाईसु ॥१०३॥ बहुमज्झचक्कवट्टणइ–चउक्कपासेसु णव णव विलाई। वेअड्ढोत्तरपासे, चउआलसयं विलाणेव ॥१०४॥ पंचमसमठ्ठारे, डुकरुच्चा वीसवरिसआउ णरा। मच्छासिणो कुरुवा,कूरा बिलवासिकुगइगमा ॥१०५॥ णिल्लज्जा णिव्वसणा, खरवयणा पियसुआइठिइरहिआ। थीउ छवरिसगब्भा, अइदुहपसवा बहुसुआ य ॥१०६॥ इअ अरछक्केणवस–प्पिणि त्ति उसप्पिणी नि विवरीआ। वीससागरकोडा–कोडीओ कालचक्कम्मि ॥१०७॥ कुरुडुगि हरिरम्मयडुगि, हेमवएरणवडुगि विदेहे। कमसो सयावसप्पिणि, अरयचउक्काइसमकालो ॥१०८॥ हेमवएरणवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया। सद्दावइ विअडावइ, गंधावइ मालवंतचउरा ॥१०९॥ चउवट्टविअड्ढा सा–इअरुणपउमप्पभासमुरवासा। मूलुवरि पिहुत्ते तह, उच्चत्ते जोयणसहस्सं ॥११०॥ मेरू वट्टो सहस्स–कंदो लक्खूसिओ सहस्सुवरिं। दसगुण भुवि त सणवइ, दसिगारस पिहुलमूले ॥१११॥ पुढवुवलवयरसकर–

मयकदो उवरि जाव सोमणस। फलिहकरययक-
चण-मओ अ जवूणओ सेसो ॥११२॥ तदुवरि
चालीसुचा, वट्टा मूलुवरि बार चउ पिहुला। वे-
रुलिया वरचूला, सिरिभवणपमाणचेइहरा ॥११३॥
चूलातलाउ चउसय, चउणवई वलयरूवविक्ख-
भ। वहुजलकुम पकग-वण च सिहरे सवेइअ॥११४॥
पणासजोअणेहिं, चूलाओ चउदिसासु जिणभ-
वणा। सविदिसि सक्कीसाण, चउवाविजुआ य पा-
साया ॥११५॥ कुलगिरिचेइहराण, पासायाण चिमे
समट्ठगुणा। पणवीसरुदद्धगुणा यामाउ इमाउ वा
वीओ ॥११६॥ जिणहरवहिदिसि जोअण-पण-
सय दीहरूपिहुल चउउच्चा। अद्धससिसमा च-
उरो, सिअकणयसिला सवेइआ ॥११७॥ सिल-
माणद्धसहस्स-समाणसीहासणेहिं दोहिं जुआ।
सिल पडुकवला र त्तकवला पुव्वपच्छिमओ ॥११८॥
जामुत्तराउ ताओ, इगेगसीहासणाउ अइपुव्वा।
चउसु वि तासु नियासण-दिसि भवजिणमज्ज-
ण होइ ॥११९॥ सिहरा छत्तीसेहिं, सहसेहिं मे-

इलाड पच सए। पिहुल सोमणसवणं, सिलविणु
यंकगवणसरिच्छ ॥ १२० ॥ तत्थाहिरि विक्खंभो,
बायालसयाड दुसयरि जुआड। अट्ठेगारसभागा,
मज्झे त चेव सहसूण ॥१२१॥ तत्तो सड्ढछसट्ठी–
सहसेहिं पंडग पि तह चेव। णवरि चवणपा-
साय–तरट्ठ दिसि कुमरिकूडा न ॥ १२२ ॥ ण-
उसहस णवसयाड, चउपणणा छच्चिगारहाया य।
णंदणबहिविक्खंभो, सहसूणो होड मज्झम्मि ॥
॥ १२३ ॥ तदहो पचसएहिं महिअलि तह चेव
भद्दसालवणं। णवरमिह दिग्गड च्चिय, कूडा न-
णवित्थर तु इमं ॥१२४॥ बावीस सहस्साई, मे-
रुओ पुव्वओ अ पच्छिमओ। तं चासोविहृत्तं,
वणमाण दाहिणुत्तरओ ॥ १२५ ॥ तेत्तीस सहस
चउ सय, पणहत्तरि गतु कुरुणइपवाया। उभओ
विणिग्गया गय–दंता मेरुम्मुहा चउरो ॥ १२६ ॥
अग्गेआइसु पयाहिणेण सिअरत्तपीअनीलाभा।
सोमणसविज्जुप्पह-गंधमायण मालवंतक्खा॥१२७॥
अहलोयवासिणीओ, दिसाकुमारीउ अट्ठ ए

एसिं । गयदतगिरिवराए, हिट्ठा चिट्ठति जवऐसु ॥ १२८ ॥ धुरि अते चउपणसय, उच्चत्ति पिहुति पणसयाऽसिसमा दीहत्ति इमे ठकला, दूसय ए-वुत्तर सहसतीस ॥१२९॥ ताणतो देवुत्तर–कुराउ चदद्धसंठियाउ दुवे । दससहसविसुद्धमहा–विदे-हदलमाणपिहुलाओ ॥ १३० ॥ एइपुव्वावरकूले, कणगमया वलसमा गिरी दो दो । उत्तरकुराइ जमगा, विचित्तचित्ता य इअरीए ॥ १३१ ॥ ए-इयहदोहा पण पण, हरया दुदुदारया इमे कम-सो । णिसहो तह देवकुरू, सूरो सुलसो य वि-ज्जुपजो ॥ १३२ ॥ तह णीलवत उत्तर–कुरु च-देरवय मालवतु त्ति । पउमदहसमा एवर, एएसु सुरा दहसमाणा ॥ १३३ ॥ अरु सय चउतीस जोअ–णाइ तह सेगसत्तभागाओ । इक्कारस य कलाओ, गिरिजमलदहाणमतरय ॥ १३४ ॥ द-हपुव्वावरदसजो यणेहि दस दस विअकूकूडाए । सोलसगुणप्पमाणा, कचणगिरिणो दुसय सव्वे ॥ ॥१३५॥ उत्तरकुरूपुव्वद्धे, जवूणय जबुपीढमतेसु ।

कोसदुगुच कमि व-रूमाणु चउवीमगुण मज्झे ॥१३६॥ पणसयवट्टपिहुत्तं, परिखित्त, त च पउमवेइए । गाउदुगच्चुचपिहु-त्तचारचउदारकलिआए ॥ १३७ ॥ त मज्झे अरूविरथर--चउचमणिपी ढिआइ जवुनरू । मूले कदे खधे, वरवयरारिट्ठवेरुलिए ॥१३८॥ तस्सय साहपसाहा, दला य विंटा य पल्लवा कमसो । सोवएणजायरूवा, वेरलितवणिज्जजंबुणया ॥ १३९ ॥ सो रययमयपवालो, रायय विडिमो य रयणपुप्फफलो । कोसदुग उव्वेहे, थुरूसाहाविडिमनिक्खत्तो ॥१४०॥ थुरूसाहविडिमदीह-त्ति गाउए अट्ठपणरचउवीस । साहा सिरिसमजवणा तम्माणमचेइअ विडिम ॥ १४१ ॥ पुविल्ल सिज्जा तिसु आ-सणाणि भवणेसु णाढिअसुरस्स । सा जवू वारसवे-इआहि कमसो परिक्खित्ता ॥ १४२ ॥ दहपउमाण ज वि-त्थर तु तमिहावि जवूरुक्खाण । नवरं महयरिआण, ठाणे इह अग्गमहिसीओ ॥ १४३ ॥ कोसदुसएहिं जवू, चउद्दिसि पुव्वसा-

लसमन्नवणा । विदिसासु सेलतिसमा, चउवाविजुया य पासाया ॥ १४४ ॥ ताणतरेसु अरू जिण–कूमा तह सुरकूराइ अवरुद्धे । रायपपीढ सामलि–रुस्खो एमेव गरूलस्स ॥ १४५ ॥ वत्तीस सोल वारस, विजया वरखार अतरणईओ । मेरुवणाओ पुव्वा वरासु कुलगिरिमहणयंता ॥१४६॥ विजयाण पिहृत्ति सग–टुनाग वारुत्तरा डुवीससया । सेलाण पञ्चसए, सवेङ्णइ पन्नवीससय ॥ १४७ ॥ सोलससहस्स पणसय, वाणउआ तह य दो कलाओ य । एणसि सवेसिं, आयामो वणमुहाण च ॥ १४८ ॥ गयदत्तगिरिव्वुद्धा, वखारा ताणमतरणईण । विजयाण च निहाणाईं मालवता पयाहिणओ ॥ १४९ ॥ चित्ते १ य वन्नकूडे २ णलिणीकूडे ३ य एगसेले ४ य। तिउडे ५ वेसमणे ६ वि य, अजण ७ मायजणे ८ चेव ॥ १५० ॥ अकावइ ९ पम्हावइ १० आसीविस ११ तह सुहावहे १२ चदे १३ । सूरे १४ णागे १५ देवे १६, सोलस वखारगिरिणामा

॥ १५१ ॥ गाहावई १ दहवई २, वेगवई ३ तत्त ४ मत्त ५ उम्मत्ता ६। खीरोय ७ सीयसोया ८, तह अंतोवाहिणी ९ चेव ॥ १५२ ॥ उम्मीमालिणी १० गत्ती–रमालिणी ११ फेणमालिणी १२ चेव। सव्वत्थ वि दसजोयण–उव्वा कुरुन्नवा एया ॥१५३॥ कच्छु १ सुकच्छो २ य महा–कच्छो ३ कच्छावई ४ तहा। आवत्तो ५ मगलावत्तो ६, पुक्खलो ७ पुक्खलावई ८ ॥१५४॥ वच्छु ९ सुवच्छो १० य महा–वच्छो ११ वच्छावई १२ वि य। रम्मो १३ य रम्मओ १४ चेव, रमणी १५ मगलावई १६ ॥ १५५ ॥ पम्हु १७ सुपम्हो १८ य महा–पम्हो १९ पम्हावई २० तओ। सखो २१ णलिणणामा २२ य, कुमुओ २३ णलिणावई २४ ॥ १५६ ॥ वप्पु २५ सुवप्पो २६ अ महा–वप्पो २७ वप्पावइ २८ त्ति य। वग्गू २९ तहा सुवग्गू ३० य, गंधिलो ३१ गंधिलावई ३२ ॥ १५७ ॥ एए पुव्वावरगय–विअकूदलिय त्ति णइदिसिदलेसु,। – नरहक्खपुरिसमाओ, इमेहिं णामेहिं

णयरीओ ॥ १५८ ॥ खेमा १ खेमपुरा २ वि अ, अरिट्ठ ३ रिट्ठावई ४ य णायव्वा । खग्गी ५ मजूसा ६ वि य, ओसहिपुरि ७ पुण्डरिगिणी ८ य ॥१५९॥ सुसीमा ९ कुण्डला १० चेव, अवरावई ११ पहंकरा १२ । अंकवई १३ पम्हावई १४, सुभा १५ रयणसंचया १६ ॥ १६० ॥ आसपुरा १७ सीहपुरा १८, महापुरा १९ चेव हवइ विजयपुरा २० । अवराइया २१ य अवरा २२, असोगा २३ तह वीअसोगा २४ य ॥ १६१ ॥ विजया २५ य वेजयंती २६, जयंति २७ अपराजिया २८ य बोधव्वा । चक्कपुरा २९ खग्गपुरा ३०, होइ अवज्झा ३१ अउज्झा ३२ य ॥१६२॥ कुरुव्वा उ गंगासिंधूओ कच्छपम्हपमुहेसु । अट्ठट्ठसु विजएसु, सेसेसु य रत्तरत्तवई ॥१६३॥ अविवक्खिऊण जगई, सव्वेवणमुहचउक्कपिहुलत्तं । गुणतीससय छुत्तीसा, णइत्ति गिरिअंति एगक्खा ॥ १६४ ॥ पणतीस सहस चउ सय, छठुत्तरा सयलविजयविक्खंभो । वणमुहदुगविक्खंभो, अडणउण सया य

चायाला ॥ १६५ ॥ सग सय पण्णासा एइ-
पिहुत्ति चउवण्ण सहस मेरुवणे । गिरिविञ्चरि
चउ सहसा, सव्वसमासो हवइ लक्खं ॥ १६६ ॥
जोअणसयदसगते, समधरणीओ अहो अहो-
गामा । बायालीससहसेहिं, गतु मेरुस्स पच्छिम-
ओ ॥ १६७ ॥ चउ चउतीस च जिणा,
जहण्णमुक्कोसओ अ हुंति कमा । हरिचक्किबला
चउरो, तीस पत्तेअमिह दीवे ॥ १६८ ॥ ससिदु-
गरविदुगचारो, इह दीवे तेसि चारखित्त तु ।
पण सय दसुत्तराइ, इगसट्ठि हाया (भागा) य
अडयाला ॥ १६९ ॥ पणरस चुलसीइसय, छप्प-
ण्णडयालभागमाणाइ । ससिसूरमंडलाइ, तयंत-
राणिगिगहीणाइ ॥१७०॥ पणतीसजोअणे भाग-
तीस चउरो अ भाग सगहा (भा) या । अंतर-
माण ससिणो, रविणो पुण जोअणे दुण्णि
॥ १७१ ॥ दीवतो असिअसए, पण पणसट्ठी अ
मंडला तेसि । तीसहिअतिसय लवणे, दसिगुण-
वीसं सय कमसो ॥ १७२ ॥ ससिससिरविरवि

अत्तरि, मज्झे इगलक्खु तिसय साहृणो। साहि-अडुसयरिपणचड–वहि लक्खो ठसय साठहिओ ॥ १७३ ॥ साहिअ पणसहस्स तिहुत्तराउ, ससिणो मुहुत्तगइ मज्झे। बावण्णहिआ सा वहि, पइम-ण्डल पउणचउवुड्ढी ॥ १७४ ॥ जा ससिणो सा रविणो, अडसयरिसएणसीसएण हिआ। किंतु-णाण अट्ठार–सट्ठिहायाणमिह वुड्ढी ॥ १७५ ॥ मुज्झे उदयन्तंतरि, चउणवइसहस पणसय ठवी सा। बायाल सट्ठिभागा, दिण च अट्ठारसमुहुत्त ॥१७६॥ पइमण्डल दिणहाणी, दुण्ह मुहुत्तेगसट्ठि-भागाण। अंते बारमुहुत्त, दिण णिसा तस्स वि-वरीअ ॥ १७७ ॥ उदयन्तंतरि बाहिं, सहसा ते-सट्ठि ठसय तेसट्ठा। तह इगससिपरिवारे, रिक्ख-ग्गवीसाग्गसीइ गहा ॥१७८॥ ठासट्ठि सहस णव-सय, पणहत्तरि तारकोडिकोडीण। सण्णंतरेण बुस्से–हगुलमाणेण वा हुंति ॥ १७९ ॥ गहरिक्ख-तारगाण, सख ससिसखसगुण काउ। इच्छियदी-वुदहिमि य, गहाइमाण विआणेह ॥ १८० ॥

चउ चउ वारस वारस, लवणे तह धायइम्मि ससिसुरा। परओदहिदीवेसु अ, तिगुणा पुविल्लसजुत्ता ॥१०१॥ णरखित्त जा समसे–णिचारिणो सिग्घसिग्घतरगइणो। दिट्ठिपहमिंति खित्ता–णुमाणओ ते णराणेव ॥१०२॥ पणसय सत्ततीसा, चउतीससहस्स लक्खइगवीसा। पुक्खरदीवड्डणरा, पुव्वेण अवरेण पिच्छंति ॥ १०३ ॥ णरखित्तवाहि ससिरवि–सखा करणतरेहिं वा होइ। तह तत्थ य जोइसिया, अचलरूपमाण सुविमाणा ॥१०४॥ इह परिहि तिलक्खा, सोलसहस्स सयदुणिण पउणअडवीसा। धणुहडवीससयगुल–तेरससड्ढा समहिआ य ॥ १०५ ॥ सगसय णउअकोडी, लक्खा छप्पण्ण चउणवइसहसा। सड्ढसयं पउणदुकोस, सड्ढासट्ठिकर गणिअ ॥ १०६ ॥ वट्टपरिहि च गणिअ, अतिमखमाइ उसु जिअ च धणु। वाहु पयरं च घण, गणेह एएहि करणेहिं ॥१०७॥ विक्खंभवग्गदहगुण–मूलं वट्टस्स परिरओ होइ। ,,परिरओ तस्स

पय ॥१८८॥ ओगाहु उस सुचिअ, गुणवीसगुणो कलाउस् होइ। विउसुपिहुत्ते चउगुण–उसुगु-णिए मूलमिह जीवा ॥१८९॥ इसुवग्गि छगुणि जीवा–वग्गजुए मूल होइ धणुपिट्ठं। धणुदुगवि सेससेस, दलिअ वाहादुग होइ ॥१९०॥ अति-मखरूस्सुसुणा, जीव सगुणिअ चउहि जईकण। लऊमि वग्गिए दस–गुणम्मि मूल हवइ पयरो ॥१९१॥ जीवावग्गाण दुगे, मिलिए दलिए अ होइ ज मूल। वेअड्डाईण तय, सपिहुत्तगुण हवे पयरो ॥१९२॥ एय च पयरगणिअ, सववहारेण दंसिअ तेण। किंचूण होइ फल, अहिअ पि हवे सुहमगणणा ॥ १९३ ॥ पयरो सोस्सेहगुणो, होइ घणो परिरयाइ सव्व वा। करणगणणालसेहिं, जतगलिहिआउ दट्ठव ॥ १९४ ॥

अथ लवणसमुद्र अधिकार द्वितीय

गोतिथं लवणाजय, जोअण पणनउइसहस जा तह। समभूतलाओ सगसय–, जलवुड्डी सहस-मोगाहो ॥१९५॥ तेरासिएण मज्झिल्ल–रासिणा

सगुणिज्जा अंतिमग। त पढमगासिजइअ, उवेहं मुणसु लवणजले ॥१९६॥ दिट्ठुवरि सहसदसग, पिहुला मूलाउ सतरसहस्सुचा। लवणसिहा सा तदुवरि, गाउदुग वड्ढइ दुवेल ॥१९७॥ बहुमज्झे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंठाणा। जोयणसहस्स जड्डा, तदसगुण हिट्ठुवरि रुंदा ॥१९८॥ लक्ख च मज्झि पिहुला, जोअणलक्ख च भूमिमोगाढा। पुव्वाइसु वडवामुह-केउवजूवेसरनिहाणा ॥ १९९ ॥ अण्णे लहुपायाला, सग सहसा अड्ड सया सचुलसीआ। पुव्वुत्तसयसपमाणा, तत्थ तत्थ प्पएसेसु ॥२००॥ कालो अ महाकालो, वेलंबपभंजणे अ चउसु सुरा। पलिओवमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयद्धाऊ ॥ २०१ ॥ सव्वेसिमहोभागे, वाऊ मज्झिल्लयम्मि जलवाऊ। केवलजलमुवरिल्ले, भागदुगे तत्थ सासुव्व ॥२०२॥ वहुंते उदारवाया, मुच्छंति खुहंति दुण्णि वाराओ। एगअहोरत्तंतो, तया तया वेलपरिवुड्ढी ॥२०३॥ बायालसट्ठिदुसयरि-सहसा नागाण मज्झुवरि-

वाहिं । वेल धरति कमसो, चउहुत्तरुसम्सु ते सव्वे ॥ २०४ ॥ बायालसहस्सेहिं, पुव्वेसाणाइदिसिविदिसि लवणे । वेलधराणुवेल–धरराईण गिरिसु वासा ॥२०५॥ गोथूभे दगभासे, संखे दगसीम नामि दिसि सेले । गोथूभो सिवदेवो, संखो अ मणोसिलो राया ॥ २०६ ॥ कक्कोडे विज्जुपभे, केलास रुणप्पहे विदिसि सेले । कक्कोडय कद्दमओ, केलास रुणप्पहा सामी ॥ २०७ ॥ एए गिरिणो सव्वे, बावीसहीआ य दससया मूले । चउसय चउवीसहिआ, विच्छिण्णा हुंति सिहरतले ॥ २०८ ॥ सतरस सय इगवीसा, उच्चत्ते ते समेइआ सव्वे । कणगकरययफालिह, दिसासु विदिसासु रयणमया ॥ २०९ ॥ णव गुणहत्तरि जोअण, बहि जलुवरि चत पणणवइभाया । एए मज्झे णव सय, तेसट्ठा भाग सगसयरि ॥ २१० ॥ हिमवतता विदिसी–साणाइगयासु चउसु दाढासु । सग सग अतरदीवा, पढमचउक्क च जगईओ ॥२११॥ जोअणतिसएहिं तओ,

सयसयवुक्तो अ ठसु चउक्केसु । अएणुएणजगइ-अतरि, अतरसमविहरा सवे ॥ २१२ ॥ पढमच-उक्कुच वहि, अकृडअजोअणे अ वीससा । सय-रिसवुढ्ढि परओ, मज्झदिसि सवि कोसदुग ॥ २१३ ॥ सवे सवेडअता, पढमचक्कम्मि तेसि नामाइ । एगोरुअ आभासिअ, वेसाणिअ चेव लगूले ॥ २१४ ॥ बीअचउक्के हयगय–गोसक्कु-लिपुवकएणणामाणो । आयसमिंढगअओ–गोपु-वमुहा य तइअम्मि ॥ २१५ ॥ हयगयहरिवग्घ मुहा, चउत्थए असकएणु हरिकएणो । अकएण कएणपावरणु, दीओ पचमचउक्कम्मि ॥ २१६ ॥ उक्कमुहो मेहमुहो, विज्जुमुहो विज्जुदत छट्ठ-म्मि । सत्तमगे दतंता, घणलट्ठनिगूढसुद्धा य ॥ २१७ ॥ एमेव य सिहरिम्मि वि, अडवीस सवि हुति छप्पएणा । एएसु जुअलरूवा, पलि-आसखसभाउ णरा ॥२१८॥ जोअणदसमसलणू, पिट्ठिकरडाणमेसि चउसट्ठी । असण च चउत्था-ओ, गुणसीदिण वच्चपालणया ॥ २१९ ॥ पढिम-

दिसि सुन्निश्रअलवण सामिणो गोअमु त्ति ड्यु दीवो । उजओ वि जवुलावण, दुदु रविदीवा य तेसि च ॥२२०॥ जगइपरुप्परअतरि, तह विन्नर वारजोअणसहसा । एमेव य पुव्वदिसि, चदचउक्कस्स चउ दीवा ॥ २२१ ॥ एव चिअ वाहिरओ, दीवा अट्ठ पुव्वपच्छिमओ । दुदु लवण ठ ठ धायइ-सन्न ससीण रवीण च ॥ २२२ ॥ एए दीवा जलुवरि, वहि जोअण सड्ढअट्ठसीइ तहा। जागा वि अ चालीसा, मज्झे पुण कोसदुगमेव ॥२२३॥ कुलगिरिपासायसमा, पासाया एसु णिअणिअपहूण । तह लावणजोइसिआ, दगफालीइ उड्ढलेसागा ॥ २२४ ॥

अथ तृतीय धातकीसन्डद्वीप अधिकार

जामुत्तरदीहेण, दससयसमपिहुल पणसयुच्चेण । उसुयारगिरिजुगेण, धायइसन्डो दुहविहत्तो ॥ २२५ ॥ सन्डदुगे छ छ गिरिणो, सग सग वासा अरविवररूवा। धुरि अति समा गिरिणो, वासा पुण पिहुलपिहुलयरा ॥ २२६ ॥ दहकुरुउत्तममे-

रमुस्सय वित्थर विअक्खाणं। वट्टगिरीण च सुमेरुवज्जमिह जाण पुव्वसम ॥ २२७ ॥ मेरुडुगं पि तह च्चिअ, णवर सोमणसहिट्ठवरिदेसे। सगअम्सहसऊणु त्ति, सहसपणसीइ उच्चत्ते ॥ २२८ ॥ तह पणणवई चउणउअ, अडचउणउअ अट्ठतीसा य। दस सयाइ कमेण, पणट्ठाण पिहुत्ति हिट्ठाओ ॥ २२९ ॥ णइकुरुदीववणमुह–दहदीहरसलकमलविक्खार। णइउंडत्त च तहा, दहदीहत्त च इह डुगुण ॥ २३० ॥ इगलक्खु सत्तस हसा, अडसिय गुणसीइ चदमालवण। पुव्वावरदीहत्त, जामुत्तर अट्ठसीअइअ ॥ २३१ ॥ चहिगयदत्ता दीहा, पणलक्खूणसयरिसहस डुगुणट्ठा। इअरे तिलरकठप्पण्ण–सहस्स सय डुणिय सगवीसा ॥ २३२ ॥ रित्ताणुमाणओ सेल–सेलणइविजयवणमुहायामो। चउलरकदीह वासा, वासविजयविक्खरो उ इमो ॥२३३॥ रित्तकगुणधुवके, दो सय वारुत्तरेहिं पविभत्ते। सव्व वासवासो, हवेइ इह पुण इय धुवका ॥ २३४ ॥ धुरि चउद

लक्ख दुसहस, दोसगणउआ धुवं तहा मज्झे। दुसय अडुत्तर सतस–द्विसहस ठवीस लक्खा य ॥ २३५ ॥ गुणवीस सय वत्तीस, सहस गुणयाल लक्ख धुवमते। णइगिरिविणमाणनिसु–ऊसित्त सोलसपिहु विजया ॥ २३६ ॥ णव सहसा ठ सय तिउ–त्तरा य ठच्चेव सोल जाया य। विजयपि-हुत्त णइगिरि-वण विजयसमासि चउलक्खा ॥२३७॥ पुव्व व पुरी अ तरू, परमुत्तरकुरूसु धाई महधाई। रक्खा तेसु सुदसण पियदसणनामया देवा ॥२३८॥ धुवरासीसु अ मिलिआ, एगो लक्खो अ अरू-सयरी सहस्सा। अट्ठ सया बायाला, परिहितिग धायईसण्डे ॥ २३९ ॥

अथ कालोदधि अधिकार चतुर्थ

कालोयो सव्वथ त्ति, सहस्सुको वेलविरहिओ तह। सुहिअसमकालमहा–कालसुरा पुव्वपच्छिम-ओ ॥ २४० ॥ लवणम्मि य जहरूजव, ससिरवि दीवा इह पि नायव्वा। णवर समतओ ते, कोस-दुगुच्चा जलस्सुवरिं ॥ २४१ ॥

अथ पुष्करद्वीपार्ध अधिकार पंचमः

पुक्करदलबहिजगइ, व संठिओ माणुसुत्तरो सेलो । वेलधरगिरिमाणो, सीहणिसाई णिसढवण्णो ॥ २४२ ॥ जह खित्तणगाईण, सगाणो धाइए तहेव इह । दुगुणो अ भद्दसालो, मेरुसुयारा तहा चेव ॥२४३॥ इह बाहिरगयदंता, चउरो दीहत्ति वीससयसहसा । तेआलीस सहस्सा, उणवीसहिआ सया दुण्णि ॥२४४॥ अब्भितर गयदंता, सोलस लक्खा य सहस छव्वीसा । सोलहिअ सयमेग, दीहत्ते हुंति चउरो वि ॥ २४५ ॥ सेसा पमाणओ जह, जबूदीवाउ धाइए भणिआ । दुगुणा समा य ते तह, धाइअसंडाउ इह णेआ ॥ २४६ ॥ अडसी लक्खा चउदस, सहसा तह णव सया य इगवीसा । अब्भितर धुवरासी पुव्वुत्तविहीइ गणिअव्वो ॥ २४७ ॥ इग कोडि तेर लक्खा, सहसा चउचत्त सग सय तियाला । पुक्करवरदीवद्धे, धुवरासी एस मज्झम्मि ॥ २४८ ॥ एगा कोडि अडती-स लक्ख चउहत्तरी सहस्सा

य । पच सया पणसट्ठा, धुवरासी पुक्खरद्धते ॥ ॥ २४९ ॥ गुणवीस सहस सग सय, चउणउअ सवाय विजयविक्खंभो । तह इह वहिवइसलिला, पविसंति अ णरणगस्साहो ॥ २५० ॥ पुक्खरदलपुव्वावर-खंमतो सहस दुग पिहु दुकुरा । जणिया तद्वाणं पुण, वहुस्सुया चेव जाणंति ॥ २५१ ॥ इह पउममहापउमा, रुक्खा उत्तरकुरूसु पुव्व व । तेसु वि वसंति देवा, पउमो तह पुंडरीओ अ ॥ २५२ ॥ दोगुणइत्तरि पढमे, अडलवणे वीअदिवि तइअद्धे । पिहु पिहु पण सय चाला, इग णरसित्ते सयलगिरिणो ॥ २५३ ॥ तेरह सय मगउणा, ते पणमेरूहि विरहिआ सवे । उस्सेहपायकंदा, माणुससेलो वि एमेव ॥२५४॥ धुवरासीसु तिलक्खा, पणपण सहस्स ठ सय चुलसीआ । मिलिआ हवंति कमसो, परिहितिग पुक्खरद्धस्स ॥ २५५ ॥ णइदहघणथणिआगणि-जिणाइणरजम्ममरणकालाई । पणयाललक्खजोअण-णरखित्त मुत्तु णो पु(प)रओ ॥२५६॥

चउसु वि उसुआरेसु, इक्किक्कं णरणगम्मि चत्ता-
रि । कूडोवरि जिणभवणा, कुलगिरिजिणभवण-
परिमाणा ॥२५७॥ तत्तो दुगुणपमाणा, चउदारा
थुत्तवण्णियसरूवे । णदीसरि बावण्णा, चउ कुं-
डलि रुयगि चत्तारि ॥ २५८ ॥ बहुसवनिगप्पे
रुअ-गदीवि उच्चत्ति सहस चुलसोई । णरणग-
सम रुयगो पुण, विच्छरि सयठाणि सहसको
॥ २५९ ॥ तस्स सिहरम्मि चउदिसि, बीअसह-
सोगिगु चउद्दि अट्ठट्ठ। विदिसि चउ इय चत्ता,
दिसिकुमरी कूडसहसका ॥ २६० ॥ इइ कइवय-
दीवोदहि-वियारलेसो मए विभइणावि । लि-
हिओ जिणगणहरगुरु-सुयसुयदेवीपसाएण ॥
॥ २६१ ॥ सेसाण दीवाण तहोदहीण, विआर-
विछारमणोरपार । सया सुयाओ परिभावयतु,
सव्व पि सव्वन्नुमइक्कचित्ता ॥ २६२ ॥ सूरीहि ज
रयणसेहरनामएहि, अप्पत्थमेव रइअं णरखित्त-
विक्ख। ससोहिय पयरण सुअणेहि लोए, पावेउ
त कुसलरगमइ पसिद्धि ॥ २६३ ॥

॥ इति श्रीलघुक्षेत्रसमासप्रकरणमूलगाथा ॥

अथ बृहतसमहणीसूत्राणि ॥ नमिउ अरिहताई ठिइनवणो गाहणा य पत्तेय ॥ सुरनारयाण वुछ, नरतिरियाण विणा नवण ॥ १ ॥ उववायचवण विरह, सखं इगसमइअं गमागमणे ॥ दसवाससहस्साइ, नवणवईणं, जहन्नठिई ॥ २ ॥ चमर बलि सार महिअ, तद्देवीण तु तिण्णि चत्तारि ॥ पलियाइं सड्ढाइ, सेसाणं नवनिकायाण ॥ ३ ॥ दाहिण दिवड्ढपलिअ, उत्तरउं हुति दुन्नि देसूणा ॥ तद्देवि सद्ध पलिअ, देसूण आउमुक्कोस ॥ ४ ॥ वतरिआण जहन्न, दसवाससहस्स पलिअमुक्कोस ॥ देवीणं पलिअद्ध, पलिय अहिय ससिरवीण ॥५॥ लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिअमेएसिं ॥ ठिइ अद्ध देवीण ॥ कमेण नक्खत्ततारराण ॥६॥ पलिअद्ध चउनागो, चउ अ-द्धनागाहिगाउ देवीण ॥ चउजुअले चउनागो, जहन्नमद्धनाग पचमए ॥ ७ ॥ दोसाहिं सत्तसाहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्किक्क महिय मित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥८॥

तित्तीस णुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिइ जिठा ॥ सोहम्मे ईसाणे, जहन्न ठिई पलिअ-महिय च ॥ ९ ॥ दोसाहि सत्त दस चउदस, सत्तर अयराइ जा सहस्सारो ॥ तप्परउ इक्किक्क, अहिअं जा णुत्तर चउक्के ॥१०॥ इगतीससागराइं, सवठे पुण जहन्नठिइ नत्थि ॥ परिगहिआणिअ राणिय, सोहम्मीसाणदेवीण ॥११॥ पलिअ अहियं च कमा, ठिई जहन्ना इउअ उक्कोसा ॥ पलिआइ सत्त पण्णा, स तहय नव पचवन्ना य ॥ १२ ॥ पण ठ चउ चउ अठ य, कमेण पत्तेअ मग्गमहिसीउ ॥ असुर नागाइ वतर, जोइस कप्पदुगिंदाणं ॥ १३ ॥ दुसुतेरस दुसुबारस, ठ प्पण चउ चउ दुगे दुगे अचउ ॥ गेविज्ज णुत्तरे दस, विसठि पयरा उवरि लोए ॥ १४ ॥ सोहमुक्को सठिइ, निअपयरविहत्त इछसगुणिआ ॥ पयरक्कोस ठिइउ, सवत्थजहन्नउ- पलिय ॥ १५ ॥ सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्त इछसगुणिउ ॥ हिठिल्लठिइसहिउ, इठिय- पयरम्मि उक्कोसा ॥ १६ ॥ सोमजमाण स तिन्ना,

ग पलिय वरणस्सदुन्निदेसूणा ॥ वेसमणे दोप-
लिया, एसठिई लोगपालाण ॥ १७ ॥ कप्पस्स
अतपयरे, निय कप्पवडिसया विमाणाउ ॥ इद-
निवासातेसिं, चउदिसिलोगपालाण ॥१८॥ (सु-
रेसु ठिइदार सम्मत्त, एएसु चेव नवणदार न-
एणइ) असुरा नाग सुवन्ना, विज्जू अग्गीइ दोव
उदहीअ ॥ दिसि पवण थणिय दसविह, नव-
णवई तेसु डुडु इदा ॥ १९ ॥ चमरे वलीअ ध-
रणे, नूयाण देअ वेणुदेवे य ॥ तत्तो अवेणु दालो,
हरिकंत हरिस्सहे चेव ॥ २० ॥ अग्गिसिह अ-
ग्गिमाणव, पुण्णविसिठे तहेव जलकते ॥ जल-
पह तह अमिअगई, मिअवाहण दाहिणुत्तरउ
॥ २१ ॥ वेलवेअ पन्नजण, घोस महाघोस एसि
मन्नयरो ॥ जबु दीव छत्त, मेरु दम पहुकाउ ॥ २२ ॥
चउतीसा चउचत्ता, अठत्तीसा य चत्तपंचएह ॥
पन्ना चत्ता कमसो लरका नवणाण दाहिणउ
॥ २३ ॥ चउचउलरकविहूणा, तावइआ चेव
उत्तरदिसाए ॥ सवे वि सत्तकोमी, वावत्तरि हुति

लक्खा य ॥ २४ ॥ चत्तारियकोमीउं, लक्खा व-
च्चेव दाहिणे जवणा ॥ तिएणेव य कोमीउं, ल-
क्खा छावट्ठि उत्तरउ ॥ २५ ॥ रयणाए हिट्ठुवरि,
जोयणसहस विमुत्तु ते जवणा ॥ जवुद्दीवसमा
तह, सख मसखिज्ज वित्थारा ॥ २६ ॥ चूमाम-
णिफणि गरुमे, वज्जे तह कलस सीह अस्से अ ॥
गय मयर वद्धमाणे, असुराईण मुणसु चिंधे ॥२७॥
असुरा काला नागु द, हि पमुरा तह सुवएण
दिसि थणिया ॥ कणगाज विज्जु सिहि दी, व
अरुण वाऊ पिअंगुनिभा ॥ २८ ॥ असुराणवत्थ-
रत्ता, नागो दहि विज्जु दीव सिहि नीला ॥
दिसि थणिअ सुवन्नाण, धवला वाऊण सऊ-
रुई ॥ २९ ॥ चउसठ्ठि सठ्ठि असुरे, छच्च सह-
स्साई धरणमाईण ॥ सामाणिया इमेसि, चउग्गु-
णा आयरक्खाय ॥ ३० ॥ रयणाए पढमजोयण,
सहस्से हिट्ठुवरिं सय सय विहूणे ॥ वतरियाण
रम्मा, जोमा नगरा असखिज्जा ॥ ३१ ॥ बाहिंवट्टा
अतो, चउरंस अहोअ कणिणयायारा ॥ जवणवईण

तह वं, तराण इदजवणाउ नायवा ॥ ३२॥ तहिं देवा वतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेण ॥ निच्चं सुहिया पमुइया, गयपि काल न याणंति ॥३३॥ ते जम्बूदीव भारह, विदेह सम गुरु जहन्न मज्झि-मगा ॥ वतर पुण अट्ठविहा, पिसायभूया तहा जक्खा ॥ ३४ ॥ रक्खस किंनर किंपुरिसा, महो रगा अट्ठमा य गधवा ॥ दाहिणउत्तरभेआ, सोलस तेसि इमे इदा ॥ ३५ ॥ कालि अ महा-काल, सुरूव पडिरूव पुण्णभद्देअ ॥ तह चेव माणिभद्दे, भीमे अ तहा महाभीमे ॥ ३६ ॥ किंनर किंपुरिस सप्पुरिस, महापुरिस तहय अ-इकाए ॥ महाकाए गीअरई, गीअजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥ ३७ ॥ चिंध कलब सुलसे, वड खट्टगे असोग चपयए ॥ नागे तुबरुअज्झए खट्टगविव-ज्जिया रुक्खा ॥ ३८ ॥ जख पिसाय महोरग, गं-धवा साम किंनरा नीला ॥ रक्खस किंपुरिसा वि अ धवला भूआ पुणो काला ॥ ३९ ॥ अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाइ अ भुअवाइए चेव ॥ कंदी अ

महाकंदी, कोहंडे चेव पयए अ ॥ ४० ॥ इयपढम जोयणसए, रयणाए अट्ठ वंतरा अवरे ॥ तेसु इह सोलसिंदा, रुअग अहो दाहिणुत्तरओ ॥ ४१ ॥ सनिहिए सामाणे, धाइ विहाए इसिय इसि-वाले ॥ ईसर महेसरे विय, हवइ सुवच्छे विसाले य ॥ ४२ ॥ हासे हास रईविय, सेएय भवे तहा महासेए ॥ पयगे पयगवईविय, सोलसइंदाण ना माइ ॥ ४३ ॥ सामाणियाण चउरो सहस्स सो-लसय आयरक्काण ॥ पत्तेय सव्वेसि, वतरवइ स-सरवीणं च ॥ ४४ ॥ इंद सम तायतीसा, परिस-तिया रक्कलोगपाला य ॥ अणिय पइण्णा अ-भिओगा, किव्विस दस भवण वेमाणी ॥ ४५ ॥ गंधव्व नट्ट हय गय, रह भरु अणियाणि सव्व इ-दाण ॥ वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहो निवासीण ॥ ४६ ॥ तित्तीस तायतीसा, परिम-तिआ लोगपाल चत्तारि ॥ अणिआणि सत्त म-त्तय, अणियाहिव सव्वइंदाणं ॥ ४७ ॥ नवर वतर जोइस, इंदाण न हुत्ति लोगपालाओ ॥ तायत्तिस

निद्दाणा, तियसानियतेसिं नहु हुंति ॥ ४७ ॥ समजूतलाउ अठहिं, दसूण जोयण सएहिं आरप्प ॥ उवरि दसुत्तर जोयण, सयम्मि चिठंति जोइसिया ॥ ४९ ॥ तछरवी दस जोयण, असीइ तदुवरि ससी य रिक्केसु ॥ अह नरणि साइ उवरिं, वहिमूलो भ्भितरे अभिई ॥ ५० ॥ तार रवि चद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मगल सणिया। सगसय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया चउसु ॥ ५१ ॥ इक्कारस जोयणसय इग वीसि क्कारसाहिया कमसो ॥ मेरुअलोगावाहिं, जोइसचक्र चरइ ठाइ ॥ ५२ ॥ अद्धकविट्ठागारा, फलिहमया रम्म जोइस विमाणा ॥ वतरनयरे हिं तो, सखिज्जगुणा इमे हुंति ॥ ५३ ॥ ताइ निमाणाइ पुण, सवाइ हुंति फालिहमयाइ ॥ दगफालीहमया पुण, लवणे जे जोइस विमाणा ॥ ५४ ॥ जोयणिगसट्ठि भागा, छप्पन्नकयाल गाउ दुइगऊ ॥ चदाइविमाणाया, म विछरा अद्ध मुच्चत्त ॥ ५५ ॥ पणयाल लख्ख जोयण, नरखित्त

तन्निमे सया न्नमिरा ॥ नरखित्तार्ड वहि पुण, अ-
ऋपमाणा तिथ्र्या निच्च ॥ ५६ ॥ ससिरविगहन
रकत्ता, तारार्ड हुंति जहुत्तर सिग्घा ॥ विनरीयाउ
महट्टीअ, विमाणवहगा कमेणेसि ॥५७॥ सोलस
सोलसअरु चउ, दो सुरसहसा पुर्गेय दाहिणर्ड ॥
पच्चिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो
॥५८॥ गहअट्ठासी नक्कत, अरूवीस तार कोम्कि
कोरूीण ॥ ठासट्ठिसहस्स नवसय, पणसत्तरि एग-
ससि सिन्न ॥ ५९ ॥ कोमा कोमी सन्न, तरंतु
मन्नति खित्त थोवतया ॥ केई अन्ने उस्से, हगु-
लमाणेण ताराण ॥ ६० ॥ किएह राहु विमाण,
निच्चं चंदेण होइ अविरहिय ॥ चउरंगुल मप्पत्तं,
हिट्ठा चदस्स न चरउ ॥ ६१ ॥ तारस्स य तारस्स
य जबुद्दीवम्मि अतर गुरुय ॥ वारस जोयण स-
हसा, डुन्निसया चेव वायाला ॥ ६२ ॥ निसढो
य नीलवंतो, चत्तारिसयउच्च पचसय कूमा ॥
अऋउवरि रिक्का, चरंति उजयट्ठ वाहाए ॥६३॥
गवट्ठा डुन्निसया, जहन्नमय तु होइ वाघाए ॥

निवाघाए गुरु लहु, दोगाउय धणुसया पंच ॥६४॥ माणुसनगाउं बाहिं, चदासूरस्स सूरचदस्स ॥ जोयणसहस्स पन्ना, स एगगा अतर दिट्ठ ॥६५॥ ससिससि रविरवि साहिय, जोयण लक्खेण अ-तर होइ ॥ रविअतरिया ससिणो, ससि अत-रिया रवी दित्ता ॥ ६६ ॥ बहियाउ माणुसुत्तर, चदा सूरा अवट्ठिउज्जोया ॥ चदा अत्तीयजुत्ता, सूरा पुण हुति पुस्सेहिं ॥ ६७ ॥ उद्धार सागर-दुगे, सड्ढे समएहिं तुल्ल दीवुदही ॥ दुगुणा दुगुण पविथर, वलया गारा पढमवज्जा ॥ ६८ ॥ पढमो जोयण लक्ख, वट्टो त वेढिउं ठिया सेसा ॥ पढ-मो जबुद्दीवो, सयभुरमणोदही चरमो ॥ ६९ ॥ जबु धायइ पुक्खर, वारुणिवर खीरघय खोय न-दिसरा ॥ अरुण रुणवाय कुंडल, सख रुयग भु यग कुसकुचा ॥ ७० ॥ पढमे लवणोजलहि, बीए कालो य पुक्खरार्द्धसु ॥ दोवेसु हुति जलही, दी-वस्स माणेहिं नामेहिं ॥ ७१ ॥ आजरण वछ गधे, उप्पल तिलएय पउम निहि रयणे ॥ वासहर दह

नईर्ठ, विजया नक्खार कव्विदा ॥७२॥ कुरु मद्दर आगासा, कूम्ना नक्खत्त चद सूरा य ॥ अन्ने वि एवमाइ, पसत्न वत्थूण जे नामा ॥७३ ॥ त नामा दीवु दही, तिपमोयायार हुति अरणाई॥ जंबू लवणाईया, पत्तेय ते असंखिज्जा ॥ ७४ ॥ ताण तिम सूरवरा, वग्रास जलहो पर तु इक्किक्ष ॥ देवे नागे जक्खे, भूए य सयभुरमणे य ॥ ७५ ॥ वारुणिवर खीरवरो, घयर लवणो य हुति भिन्नरसा ॥ कालो य पुक्करोदहि, सयभुरमणो य उदगरसा ॥ ७६ ॥ इक्कुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम बहुमछा ॥ पण सग दस जोयण सय, तणु कमा थोवसेसेसु ॥ ७७ ॥ दो ससि दो रवि पढमे, दुगुणा लवणम्मि धायईसंडे ॥ वारससि वारस रवि, तप्पभिइ निदिट्ठ ससिरविणो ॥ ७८ ॥ तिगुणा पु विल्ल जुया, अणतराणतरमि खित्तम्मि ॥ कालोए वायाला, विसत्तरी पुक्खरद्धमि ॥ ७९ ॥ दो ससि दो रवि पती, एगतरिया छसट्ठि सखाया ॥ मेरू

णुसरिते परियमति ॥ ७० ॥ ठप्पएण पंतीउं, नक्सत्ताण तु मणुयलोगमि ॥ ठावट्ठी ठावठीए, होई इक्किक्किया पंती ॥७१॥ एव गहाइणो निहु, नवर धुव पासवत्तिणो तारा॥ तच्चिय पयाहिण ता, तत्थेव सया परिन्नमति ॥ ८२ ॥ चउयाल सयं पढमि, ह्ययाए पतीए चदसुराण ॥ तेणपर पती-उ, चउरुत्तरियाइ वुड्ढीए ॥ ८३ ॥ बावत्तरि च दाण, बावत्तरि सूरियाण पंतीए॥पढमाए अतर पुण, चदचदस्स लक्स डुग ॥ ८४॥ जो जावइ लक्खाइ, विन्नरउं सागरो य दीवो वा ॥ तावइ-आउय तहिं, चदासूराण पतीउं ॥८५॥ पनरस चुलसीइ सय,इह ससि रवि मकलाइ तन्निउत्त॥ जोयण पणसय दसहिय, भागा अमयाल इग-सट्ठा ॥ ८६ ॥ तिसिगसट्ठा चउरो, इगइगसट्ठस्स सत्तन्नइयस्स ॥ पणतीस च डु जोयण, ससिर-विणो मकल तरय ॥८७॥ पणसट्ठी निसढमिय, तत्तिय थाहा डु जोयण तरिया ॥ एगुणवोस च सय, सूरस्स य मकला लवणे ॥ ८८ ॥ मकलद-

सग लवणे, पणग निसढम्मि होइ चदस्स ॥ म-
रुव अतरमाण, जाण पमाण पुरा कहिय ॥८९॥
ससिरविणो लवणमि य, जोयणसय तिण्णितीस
अहियाइं ॥ असिई तु जोयणसय, जवुद्दीवम्मि प
विसति ॥ ९० ॥ गह रिक्ख तार सख, जत्थेत्थसि
नाउ मुदहिदीवे वा ॥ तस्ससिहि एग ससिणो,
गुणसंख होइ सव्वग्ग ॥९१॥ बत्तीसट्ठावीसा, बारस
अट्ठ चउ विमाण लक्खाइ॥ पन्नास चत्त छ सहस,
कमेण सोहम्म माईसु ॥९२॥ दुसु सयचउ दुसु
सयतिग, मिगारसहिय सय तिगेहिट्ठा ॥ मज्जे
सत्तुत्तरसय, मुवरि तिगे सयमुवरि पंच ॥ ९३ ॥
चुलसीइ लक्ख सता, णवइ सहस्सा विमाण ते-
वीस ॥ सव्वग्ग मुड्ढलोग, मिइदया बिसट्ठि पय-
रेसु ॥ ९४ ॥ चउदिसि चउपतीउ, बासट्ठिविमा-
णिया पढमपयरे ॥ उवरि इक्किक्कहीणा, अणुत्तरे
जाव इक्कि ॥ ९५ ॥ इदयवट्टा पंतिसु, तोक-
मसो तस चउरसा वट्टा ॥ विविहा पुप्फवकिण्णा,
तयतंरे मुत्तुं पुव्वदिसि ॥ ९६ ॥ वट्ट वट्टेसुवरिं,

तस तसेसु उवरिम होइ ॥ चउरसे चउरंस, उड्ढु विमाण सेढीए ॥ ९७ ॥ सव्वे वट्टविमाणा, एगडुवारा हवंति नायव्वा ॥ तिण्णिय तसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥ ९८ ॥ आवलिय विमाणाण, अंतर नियमसो असंखिज्जा ॥ संखि ज्जमसंखिज्जा, त्तणिय पुप्फावकिणाण ॥ ९९ ॥ एग देवे दीवे, दुन्ने य नागोदहीसु वोधव्व ॥ चत्तारि जक्खदीवे, भूय समुद्देसु अठ्ठेव ॥ १०० ॥ सोलस सयंभुरमणे, दीवेसु पइठ्ठिया य सुरभ- वणा ॥ इगतीस च विमाणा, सयंभुरमणे समुद्दे य ॥ १०१ ॥ अच्चंत सुरहिगंधा, फासे नवणीय मउय सुह फासा ॥ निचुज्जोया रम्मा, सयपहा ते विरायंति ॥ १०२ ॥ जे दक्खिणेण इंदा, दाहिं- णउं आवली मुणेयव्वा ॥ जे पुण उत्तर इंदा, उत्तरउं आवली मुणे तेसिं ॥ १०३ ॥ पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स ॥ तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुंति दुण्हपि ॥ १०४ ॥ पुव्वेण पच्छिमेण य, सामन्ना आवली मुणेयव्वा ॥

जेपुण वट्ट त्रिमाणा, मज्झिल्ला दाहिणल्लाणं ॥१०५॥ पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ॥ चउरंस विमाणाण, चउदिसिं वेइया होइ ॥१०६॥ जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तसस्स वेइया होइ ॥ पागारो बोधव्वो, अवसेसेसुत्तु पासेसु ॥ १०७ ॥ पढमं तिम पयरा वलि, विमाण मुहभूमि तस्स मासऊ ॥ पयरगुण मिठकप्पे, सव्वग्ग पुप्फकिणयरे ॥ १०८ ॥ इगदिसि पति विमाणा, तिविभत्ता तस चउरसा वट्टा ॥ तसेसु सेसमेग, खिव सेस दुगस्स इक्किक्क ॥१०९॥ तसेसु चउरंसेसु य, तो रासितिगपि चउगुण काउ ॥ वट्टेसु इंदय खिव, पयरधण मीलियं कप्पे ॥ ११० ॥ कप्पेसुय मिय महिसो, वराह सीहाय छगल सालूरा ॥ हय गय भुयग खग्गी, वसहा विडिमाइ चिंधाइं ॥ १११ ॥ चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सठी य पन्न चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वीसा, दस सहस्स आय रक्ख चउगुणिया ॥ ११२ ॥ दुसु तिसु तिसु कप्पेसु, घणुदहि घणवाय तदुभयं च कमा ॥ सुरभवण

पइठाण, आगास पइठिया उवरिं ॥ ११३ ॥ सता-
वीस सयाई, पुढवीपिंको विमाण उच्चत्त ॥ पचसया
कप्पदुगे, पढमे तत्तोय इक्कि ॥ ११४ ॥ हायइ
पुढवीसु सय, वड्ढइ भवणेसु दु दु दु कप्पेसु ॥
चउगे नवगे पणगे, तहेव जाणुत्तरेसु भवे ॥११५॥
इगवीस सया पुढवी, विमाण मिक्कारसेवय सयाइ
॥ बत्तीस जोयणसया, मिलिया सव्वत्थ नायव्वा
॥ ११६ ॥ पण चउ ति दु वण जिमा, ण सधय
दुसु दुसुय जा सहस्सारो ॥ उवारि सिय भवण
वंतर, जोइसियाण विविहवन्ना ॥ ११७ ॥ रविणो
उदयत्थतर, चउणवइसहस्स पणसय छवीसा ॥
बायाल सट्ठिभागा, ककडसकति दियहंमि ॥११८॥
एयमि पुणो गुणिए, तिपच सग नवहि होइ
कमसमाण ॥ तिगुणंमि य दोलक्खा तेसीइ सहस्स
पचसया ॥ ११९ ॥ असिई छसट्ठिभागा, जोयण
चउलक्ख बिसतरि सहस्सा ॥ छचसया तेत्तीसा,
तीसकला पंचगुणियम्मि ॥ १२० ॥ सत्तगुणे छल-
क्खा, इगसट्ठिसहस्स छसय ठासीया ॥ चउपन्न-

कला तह नव, गुणमि अरूलक्क सट्ठाउं ॥१२१॥ सत्तसया चत्ताला, अठारसकला य इयकम्मा चउरो ॥ चक्का चवला जयणा, वेगाय तहा गइ चउरो ॥ १२२ ॥ इच्चयगइ चउहि, जयणयरि नाम केइ मन्नति ॥ एहि कमेहिं मिमाहिं, गईहिं चउरो सुरा कमसो ॥ १२३ ॥ विक्कंत्त आयाम, परिहि अभितरि च बाहिरय ॥ जुगवं मिणति छम्मा, साजाव न तहावि ते पार ॥ १२४ ॥ पावति विमाणाण, केसिंपिहु अहव तिगुणियाईए ॥ कमचउगे पत्तेय, चक्काईगईउ जोइज्जा ॥ १२५ ॥ जोयण लक्क पमाण, निमिस मित्तेण जाइ जो देवा ॥ छम्मासे णय गमण, एग रज्जू जिणा विंति ॥ १२६ ॥ तिगुणेण कप्पचउगे, पचगुणेण तु अठसु मुणिज्जा ॥ गेविज्जे सत्तगुणेणं, नवगुणे णुत्तरचउके ॥ १२७ ॥ पढमपयरम्मि पढमे, कप्पे उडुनामइंदयविमाण ॥ पणयाल लक्कजोयण, लक्क सव्वुवरि सव्वठ ॥ १२८ ॥ उडु चद..

..िय वरुणे तहेव आणदे ॥ व..

रुइजे, चंद अरुणे य वरुणे य ॥ १२९ ॥ वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥ मेहे अग्ध हलिद्दे, नलिणे तहलोहियक्खेय ॥ १३० ॥ वइरे अंजण वरमा,ल रिठ देवेय सोम मंगलए॥ बल भद्दे चक्क गया, सोवत्थिय णदियावत्ते ॥१३१॥ आजकरेय गिद्धी, केउ गरुले य होइ बोधवे ॥ वंभे वम्भहिए पुण, वभुत्तर लंतए चेव ॥१३२॥ महसुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणएय बोधवे॥ पुप्फे लकार आरण, तहा निय अच्चुए चेव॥१३३॥ सुदसण सुपविबद्धे ॥ मणोरमे चेव होइ पढम- तिगे ॥ तत्तोय सव्वभद्दे, विसालए सुमणे चेव ॥ १३४ ॥ सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइय तिगे ॥ सव्वट्ठ सिद्धि नामे, इदया एए वासट्ठी ॥ १३५ ॥ पणयालीस लक्खा, सीमतय माणुस उडु सिवच ॥ अपयट्ठाणो सव्व, ठ जंबु- द्दीवो इम लक्ख ॥ १३६ ॥ अह भागा सग पुढवी, सु रज्जु इक्किक तह य सोहम्मे ॥ माहिंद लंत सहसा, र अच्चुय गेविज्जा लोगते ॥ १३७॥ सुरेसु

नवण दार सम्मत्तं ॥ इन्दि [illegible] दारं [illegible]
॥ नवण वण जोइ सोह, [illegible] नाणु-
माण ॥ ५ ५ ५ चउक्को दि [illegible] [illegible]
५क्कि ॥ १३० ॥ कप्पदुग [illegible] नवगं, नवगं
पणगे य जिहठिइ अयरा [illegible] चउदठाग्ग,
बावीसिगतीस तित्तीस [illegible] तिरिय नागि
कूणे, इक्कारसगाउ पहिर [illegible] ॥ [illegible]
नागा, अयरे अयरं [illegible] ॥ १४० ॥
चयपुव्वसंराउं, [illegible] ॥ [illegible]
विसेसा, सणकुमाराइ [illegible] ॥ १४१ ॥ नव
धारणिज्जा एसा, [illegible] ॥
गेविज्जा णुत्तरेसु, [illegible] नत्थि ॥ १४२ ॥
साहाविय वेउव्विय, [illegible] कमेण [illegible] ॥
अगुल असंख भागा, [illegible] संखिज्जा [illegible]
॥ १४३ ॥ सुरेसु [illegible] दारं सम्मत्तं [illegible]
विरहकालोववाय [illegible] दारं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] चउविह, [illegible] मास मुहुत्त
[illegible] [illegible]

भवण वण जोइ सोहे, म्मी साणेसू मुहुत्त चउवीस ॥ तो नवदिण वीसमुहू, बारसदिण दस मुहुत्ता य ॥ १४५ ॥ वावीस सङ्ढदीहा, पणयाल असीइ दिणसयतत्तो ॥ सखिज्जा इस मासा, इसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥ १४६ ॥ वासाणसया सहसा, लक्खा तह चउसु विजयमाईसु ॥ पलियाअसखभागो, सवठे सखभागो य ॥ १४७ ॥ सव्वेसिपि जहन्नो, समर्ठ एमेव चवणविरहोवि ॥ इग इ ति सख मसखा, इग समए हुंति अ चवंति ॥१४८॥ नरपंचिंदिय तिरिया, णुप्पत्तीसुरभवे पजुत्ताण ॥ अज्झवसाय विसेसा, तेसिंगइ तारतम्मतु ॥१४९॥ नर तिरिअसखजीवी, सव्वे नियमेण जंति देवेसु ॥ निय आउअसम हीणा उएसु ईसाण अंतेसु ॥ १५० ॥ जंति समुछिम तिरिया, भवण वणेसु नजोइमाईसु ॥ ज तेसिं उववाउं, पलिया सखस आऊसु ॥ १५१ ॥ बालतवे पडिवद्धा, उक्कड रोसा तवेण गारविया ॥ वेरेणय पडिबद्धा, मरिउ असुरेसु जायंति ॥ १५२ ॥ रज्जुगाइ विस भक्खण,

जल जलण पवेस तण्ह वुह डुहर्ड ॥ गिरिमिर
परूणाउ मुया, सुह्नाना, हुति वतरिया ॥ १५३॥
तावस जा जोइसिया, चरग परिव्वाय बंभलोगा
जा ॥ जासहस्सारो पचि, दितिरिश्च ना श्च नुर्ड
सह्या ॥ १५४ ॥ जह लिगमिच्छदिठि,गेविज्जा जाव
जंति उक्कोस ॥ पयमवि श्रमहहनो मुणक मिछ
दिठीर्ड ॥ १५५ ॥ सुत्त गणहररइश्च, तहेव
पत्तेयवुद्ध रइश्र च ॥ सुयकेवलिणा रइश्च श्रभिन्न
दस पुविणा रइश्च ॥ १५६ ॥ छउमत्थ मनयाण,
उववा उक्कोसर्ड श्च सबठे ॥ तेसि सठ्ठाणपिश्च,
जहन्नर्ड होइ सोहम्मे ॥ १५७ ॥ ब्रतमि चउद
पुविस्स, तावसाईण वंतरेसु तहा ॥ एमें उववाय
विहि, नियकिरियठियाण सबावि ॥ १५८ ॥
वज्जरिसहनाराय, पढम वीय च रिसहनाराय
॥ नारायमद्धनाराय, कीलिया तह य छेवठ्ठा ॥ १५९॥
एए छ स्सघयणा, रिसहोपट्टोय कीलिया वज्जा॥
उभर्उमक्कडबंधो, नाराउ होइ विन्नेर्ड ॥ १६०
छ गब्भतिरीनराण, समुछिम पणिदि ॰

॥ सुरनेरइया एगि, दियाय सव्वे असंघयणा ॥ ॥ १६१ ॥ ठेवठेणोगम्मइ, चउरो जा कप्प कोलियाईसु ॥ चउसु दु दु कप्पवुड्डी, पढमेण जाव सिद्धीवि ॥ १६२ ॥ समचउरसे नग्गो, हमाइ वामणय खुज्ज हुंमेय ॥ जीवाण ठ सठाणा, सवत्र सुलरक पढमं ॥ १६३ ॥ नाहीए उवरि बिअं, तई अमहो पिठि उयर उरवज्जा ॥ सिर गीव पाणि पाए, सुलरकण त चउत्र तु ॥ १६४ ॥ विवरीय पचमग, सवत्र अलरकण न्नवे ठठ ॥ गप्तय नर तिरिय ठहा, सुरा समा हुंमया सेसा ॥१६५॥ इति देवाना गतिद्वार, अधुना आगतिद्वार माह ॥ जति सुरा सखाउ य, गप्तय पज्जत मणुयतिरिएसु ॥ पज्जत्ते सुय वायर नूदग पत्तेयग वणेसु ॥ १६६ ॥ तत्रवि सण कुमार, प्पभिई एगिदिएसु नो जति ॥ आणय पमुहा चवित्र, मणुएसु चेव गछति ॥ १६७ ॥ दोकप्प कायसेवी, दो दो दो फरिस रूव सद्देहिं ॥ चउरो मणेणु वरिमा अप्पवियारा अणतसुहा ॥ १६८ ॥ ज च काम-

सुह लोए, जं च दिव्व महासुह ॥ वीयराय सुह-स्सेय, णंतणंतगुणियं न घई ॥ १६९ ॥ उववाउ देवीण, कप्पदुगं जा परो सहस्सारो ॥ गमणा गमण नत्थी, अच्चुय परउ सुराणंपि ॥ १७० ॥ तिपलिय तिसार तेरस, साराकप्प दुग तइय लंत अहो ॥ किव्विसिय नहुंति उवरिं, अच्चुय परउ भिउगाई ॥ १७१ ॥ अपरिग्गह देवीण, विमाण लक्खा छ हुंति सोहम्मे ॥ पलियाई समया हिय, ठिइ जासि जाव दसपलिया ॥ १७२ ॥ ताउ सण कुमारा, एव वढुंति पलिय दसगेहिं ॥ जा बंभ सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ॥ १७३ ॥ ईसाणे चउलक्खा, साहिय पलियाइ समय अहिय ठिइ ॥ जा पनर पलिय जासिं, ताउ माहिंद-देवाण ॥ १७४ ॥ एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसग वुट्ठीए ॥ लंत सहसार पाणय, अच्चुय देवाण पणपन्ना ॥ १७५ ॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हाय सुक्कलेसाउ ॥ भवण वण पढम चउले, सजोइस कप्पदुगे तेऊ ॥

कप्पतिय पम्हलेसा, लताऽसु सुक्कलेस हुति सुरा ॥ कणगाभ्न पउमकेसर, वण्णाऽसु तिसु उवरि धवला ॥ १७७ ॥ दसवास सहस्साइ, जहन्नमाउ धरति जे देवा ॥ तेसि चउथा हारो, सत्तहि थोवेहि ऊमासो ॥ १७८ ॥ अ॰हि वाहि निमुक्कस्स, नीसासूसास एगगो ॥ पाणू सत्तऽमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥ १७९ ॥ लवसत्त-हुत्तरीए, होइ मुहुत्तो ऽमम्मि ऊसासा ॥ सगतीस सय तिहुत्तर, तीसगुणाते अहोरत्ते ॥ १८० ॥ लक्ख तेरस सहसा, नउयसय अयरसरायादेवे ॥ पक्खेहिं ऊसासो, वास सहस्सेहि आहारो॥१८१॥ दसवास सहस्सुवरिं, समयाई जाव सागर ऊण ॥ दिवसमुहुत्त पहूत्ता, आहारूसास सेसाण ॥ १८२ ॥ सरिरेणो उयाहारो, तयाऽफासेण लोम आहारो ॥ पक्खेवाहारोपुण, कावलिउ होई ना-यव्वो ॥ १८३ ॥ उंया हारासव्वे, अपजत्त पजत्त लोमआहारो ॥ सुरनिरय एगिंदिविणा, सेस भ-नवा सपक्खेवा ॥ १८४ ॥ सच्चित्ता चित्तोभय, रूवो

आहार सव्वतिरिआण ॥ सवनराणं च तहा, सुरनेरइयाण अचितो ॥ १०५ ॥ आजो गाणा जोगा सव्वेसि होइ लोम आहारो ॥ निरयाण अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणुणो ॥ १०६ ॥ तह विगल नारयाण, अंतमुहुत्ता सहोइ उक्कोसो पचिंदि तिरि नराण, साहाविय छठ्ठ अठ्ठमर्उ ॥ १०७ ॥ विग्गहगइ मावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगी य ॥ सिद्धा य अणाहाग, सेसा आहारगा जीवा ॥ १०८ ॥ केसठि मस नह रो, म रहिर वसचम्म मुत्त पुरिसेहिं ॥ रहिया निम्मल देहा, सुगध निस्सास गय लेवा ॥ १०९ ॥ अत-मुहुत्तेण चिय, पज्जत्ता तरुण पुरिस सकासा ॥ सव्वगभूपणधरा, अजरानिरुया समा देवा ॥११०॥ अणि मिस नयणामणक, ज्ज साहण पुप्फदाम अमिलाणा ॥ चउरंगुलेण भूमि, न छिविति सुरा जिणा बिति ॥ १११ ॥ पंचसुजिणकल्लाणे, सु चेव महरिसि तवाणुभावाउ ॥ जम्मं तरनेहेण य, आगछति सुरा इहय ॥ ११२ ॥ सकति दिव्वपे-

मा, विसय पसत्ता समत्त कत्तवा ॥ अणहीण
णुय कज्जा, नरजव मसुइ न इति सुरा ॥१९
चत्तारि पचजोयण, सयाइ गधोय मणुय लोग
॥ उड्ढ वच्चइ जेण, नहु देवा तेण आवति
॥ १९४ ॥ दो कप्प पढम पुढवी, दो दो दो बं
तइयग चउथि ॥ चउ उवरिम उंहीए, पास
पचम पुढवि ॥ १९५ ॥ छठी छगेविज्जा, सत्त
यंर अणुत्तर सुराउ ॥ किंचूण लोगनालिं, अ
सदीवुदहि तिरिय तु ॥ १९६ ॥ बहुअरगं उ
रिमगा, उड्ढ सविमाण चूलिय धयाइ ॥ ऊण
सागरे स, ख जोयणा तप्पर मसंखा ॥ १९
पण वीस जोयण लहु नारय जवणवण जोइ
प्पाण ॥ गेविज्ज णुत्तराणय, जहसख उहियाग
॥ १९७ ॥ तप्पागारे पल्लग, पडहग जल्लरि
इग पुप्फजवे ॥ तिरिय मणुएसु उहि, नाणा
सवित्थजाणिओ ॥१९९॥ उड्ढ जवण वणाण,बहु
वेमाणियाण होउहो ॥ नारय जोइस तिरियं,
तिरिगाणं अणेगविहो ॥ २०० ॥ ज्यदेवाण

णियं, ठिइ पमुह नारयाण वुछामि ॥ इगतिन्नि सततदससतर, अयर वावीस तित्तीसा ॥ २०१ ॥ सत्तसु पुढवीसुठिई, जिठोवरिमाऽ हिठ पुइवीए ॥ होइ कमेण कणिठा, दसवास सहस्स पढमाए ॥ २०२ ॥ नवइ सम सहस लरका, पुव्वाण कोम्मि अयरदस जागा ॥ इक्किक जाग वुट्ठी, जा अयरं तेरसे पयरे॥ २०३ ॥ इय जिठ जहन्ना पुण, दस वास सहस्स लरक पयर ड्डुगे ॥ सेसेसु उवरि जिठा, अहो कणिठाउ पऽ पुढवी ॥ २०४ ॥ उवरि खिइ ठिइ विसेसो, सगपयर विहत्तु इच्छसं गुणिउ॥ उवरिम खिइ ठिइ सहिउ, इछिय पयरम्मि उक्कोसा ॥ २०५ ॥ सत्तसु खित्तज वेयण, अन्नन्न कयावि पहरणेहि विणा ॥ पहरण कया वि पंचसु, तिसु परमाहम्मिय कयावि ॥ २०६ ॥ वधण गइ सठाणा, नेया वन्ना य गंध रस फासा ॥ अगुरु लहु सद्द दसहा असुहाविय पुग्गला निरिए ॥ २०७ ॥ नरया दस विह वेयण सीउसिण खुह पिवास कंडूहिं ॥ परवस्स जरदाह, जय

सोग चेव वेयति ॥२००॥ पण कोम्हि अठ सठी, लक्का नर नवइ सहस पचसया ॥ चुलसी अहीयरोगा, ठठी तह सत्तमी नरए ॥ २०९ ॥ रयण प्पह सक्कर पह, वालय पह पक पहय धूमपहा ॥ तमपहा तम तमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइ ॥ २१० ॥ घम्मा वंसा सेला, अजणरिठा मघा य माघवई ॥ नामेहि पुढवीउं, छत्ताइ छत्त सठाणा ॥ २११ ॥ असीय वत्तिस अमविस, वीसा अठार सोल अम सहसा॥ लरकुवरि पुढवि पिंमो, घणुदहि घण वाय तणुवाया ॥ २१२ ॥ गयण च पइठाण, वीस सहस्साइ घणुदही पिंमो ॥ घणतणुवाया गासा, असख्य जोयण जुया पिंमो ॥ ॥ २१३ ॥ न फुसतिअलोग चउ, दिसपि पुढवीय वलयसगहिया ॥ रयणाए वलयाए,ठध पचम जोयण सद्ध ॥२१४॥ विरकभो घणउदही, घणतणु वायाण होइ जहसख ॥ सत्तिभाग गाउय, गाउय तह गाउय तिभागो ॥ २१५ ॥ पढम महीवलएसु, खिविज्ज एय कमेण वीयाए ॥ दु

ति चउ पच ह्न गुण, तइया इसु तपि खिव क-
मसो ॥ २१६ ॥ मझेचिय पुढवि अहे, घणुदहि
पमुहाण पिंड परिमाण ॥ जणिय, तवो कमेण,
हायइ जा वलय परिमाण ॥ २१७ ॥ तीस पण-
वीस पणरस, दसतिन्नि पणूण एगलरकाइ ॥ प-
चय निरया कमसो, चुलसीइ लरकाइ सत्तसु वि
॥ २१८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग प-
यर सव्वि गुणवन्ना ॥ सोमताइं अप्पइ, हाणता
इंदया मझे ॥ २१९ ॥ सोमतउंत्तपढमो, बीउ
पुण रोरुय त्ति नामेण ॥ रंतो य तह्न तइउ, होइ
चउत्थो य उप्पंतो ॥ २२० ॥ संजतमसंजतो विप्पंतो
चेव सत्तमो निरउ ॥ अठमउ ज्जतो पुण, नवमो,
सीउत्ति णायव्वो ॥ २२१ ॥ वक्कतणु वुक्कतो, वि-
कंतो तह चेव रोम्उ निरउ ॥ पढमाए पुढवीए,
इंदिया एएबोधव्वा ॥ २२२ ॥ थणिए थणए य
तहा, मणए मणए य होइ नायव्वे ॥ घट्टे तह
संघट्टे, जिम्हे अव जिम्हए चेव ॥ २२३ ॥ लोले
लोलावत्ते, तहेव घण लोलुए य बोधव्वे ॥ वीयाए

पुढवीए, इक्कारस इंदिया एए ॥ २२४ ॥ तत्तो तविउ तवणो, तावणो पचमो य निद्दड्ढो ॥ छट्ठो पुण पज्जलिउ, उप्पज्जलिउयसत्तमउ ॥ २२५ ॥ सजलिउअठमउ, सपज्जलिउ य नवमउ नणिउ ॥ तइयाए पुढवीए, नवइंदिय नारया ए ए ॥२२६॥ आरे तारे मारे, वच्चे तमए य होइ नायव्वे ॥ खाड खडे खडखडे, इंदय नरया य चउत्थीए ॥२२७॥ खाए तमए य तहा, जसे जसधए तहा तिमिसे ॥ इह पचम पुढवीए, पच निरइंदया हुंति ॥ ॥ २२८ ॥ हिमवद्दल लल्लके, तिण्णिउनिर इंदयाय छट्ठी ए ॥ एगो य सत्तमाए, अपइट्ठाणो उ नामेण ॥ २२९ ॥ पुव्वेण होइकालो, अवरेण पइठिउ महाकालो ॥ रोरो दाहिणपासे, उत्तर पासे महारो रो ॥ २३० ॥ तेहिंतो दिसि विदिसिं, विणिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पढमे पयरे दिसि गुण, वन्ना विदिसासु अडयाला ॥ २३१ ॥ बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणाउ हुंति पतीउ ॥ जा सत्तमि महि पयरे, दिसि इक्किक्को विदिसि

नत्थि ॥ २३२ ॥ इत्थप्पयरेग दिसि, सखअरुगुणा चउ विण इग सखा ॥ जह सीमतय पयरे, एगु-णनउया सया तिन्नी ॥२३३॥ अपयठाणे पंचउ, पढमो मुहमतिमो हवइ भूमी ॥ मुह भूमि समासऊ, पयरगुण होइ सवधण ॥ २३४ ॥ छणवइ सय तिवण्णा, सत्तसु पुढवीसु आवली निरया ॥ सेस तियासी लक्खा, तिसय सियाला नवइ सहस्सा ॥ २३५ ॥ तिसहस्सुच्चा सवे, सखमसखिज्ज वित्थरा यामा ॥ पणयाल लक्ख सीम, लक्ख अपइठाणो ॥ २३६ ॥ हिठा घणो सहस्सा, उप्पिंसे कुठरे सहस्स तु ॥ मज्झे सहस्स सुसिरा तिन्नि सहस्सुस्सिया निरया ॥ २३७ ॥ छसु हिठोवरि जोयण, सहस्स बावन्न सट्ठचरिमाए ॥ पुढवीए निरय रहिय, निरया सेसम्मि सवासु॥२३८॥ बिसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय पयरेहिं ॥ ऊणा रुवुण निय पयर, भाइया पत्थडंतरय ॥ २३९ ॥ तेसीया पंचसया, इक्कारस चेव जोयण सहस्सा ॥ रयणा य पत्थडतर, मेगोच्चिय

जोयण तिन्नागो ॥ २४० ॥ सत्ताणवइ सयाइ, बी-
याए पत्थरंतर होइ ॥ पणहत्तरि तिन्निसया, बार-
सहस्सा य तइयाए ॥ २४१ ॥ छावठसय सोलस,
सहस्स पका य दोति नागा य ॥ अट्ठाइज्जासयाइ,
पणवीस सहस्स धूमाए ॥ २४२ ॥ बावन्नसह्व स-
हसा तमप्पभापत्थरुतर होइ ॥ एगोच्चिअपत्थ
मर्ठ, अतररहिठं तमतमाए ॥ २४३ ॥ पउणठ
धणु ठ अगुल, रयणाए देहमाणमुक्कोस ॥ सेसासु
दुगुण, दुगुण पणधणुसय जावचरिमाए ॥ २४४ ॥
रयणाय पढमपयरे, हत्थतिय देहमाणमणुपयरं ॥
छप्पणणगुलसड्ढा वुड्ढीजावतेरसे पुर्ण ॥ २४५ ॥ ज
देहपमाण उवरि, माए पुढवीइ अतिमे पयरे ॥
त चिय हिठ्ठि म पुढवी, पढम पयरम्मि बोधव्वं
॥ २४६ ॥ त चेगूणग सगपयर, भइय बीयाइ प-
यर वुड्ढिजवे ॥ तिकर त्ति अगुल करसत, अगुला
सट्ठि गुण वीस ॥ २४७ ॥ पणधणु अगुलवीस,
पणरसधणु दुण्णिहत्थ सड्ढाय ॥ बासठ्ठिधणुहसड्ढा,
पण पुढवी पयर वुड्ढिम्मा ॥ २४८ ॥ इय साहा-

विय, देहो, उत्तर, वेउव्विउ य तद्गुणो ॥ दुविहो वि जहएण कमा, अगुल असख सखसो ॥२४९॥ सत्तसु चउवीस मुहू, सग, पनरदिणेग दु चउ छम्मासा ॥ उववाय चवणविरहो, उहे बारस मुहुत्त गुरू ॥ २५० ॥ लहुउ दुहावि समउं, सखा पुण सुरसमा मुणेयव्वा ॥ सखाउ पजत्त पणि, दितिरि नरा जंति निरएसु ॥२५१॥ मिछादिठि महार, ज परिगहो तिव्वकोह निस्सोलो ॥ नरयाउय निबधई, पावमई, रुदपरिणामो ॥ २५२ ॥ असन्निसरिसिव पक्खी, ससीह उरगि छि जंति जा छठि ॥ कमसो-उक्कोसेण, सत्तम पुढवी मणुय मच्छा ॥२५३॥ वाला दाढी पक्खी, जलयर नरया गया उ अइकूरा ॥ जंतिपुणो नरएसु, बाहुल्लेण न उण नियमो ॥ ॥२५४॥ दो पढम पुढवि गमण, छेवठे कीलियाइ सघयणे ॥ इक्कि पुढविवुड्ढी, आइ तिलेसाउ नरएसु ॥२५५॥ दुसु काऊ तइयाए, काउ नीला य नील पंकाए ॥ धुमा य नीलकिण्हा, दुसु किण्ह हुंति लेस्साउ ॥२५६॥ सुर नारयाण ताउ, दव्वलेस्सा

अवहिया नणिया ॥ जाव परावत्तीए, पुणएसिं हुति ठल्लेस्सा ॥ २५७ ॥ निर उवट्टा गन्नय, पजत्त-सखाउ लद्धिए एसिं ॥ चक्कि हरिजुअल अरिहा, जिण जइ दिसि सम्मपुहविकमा ॥ २५८ ॥ रय-णाएर्हि गाउय, चत्तारि ऋुठ गुरु लहु कमेण ॥ पइ पुढवि गाउयरू हायइ जा सतमि इगऋ॥२५९॥ (नरय दारं सम्मत्त, मणुयदार नणइ) ॥ गन्न-नर ति पलियाऊ, ति गाऊ उक्कोस ते जहन्नेण ॥ मुच्छिम डुहावि अत मु, हु अगुल असरा ना-गतणू ॥ २६० ॥ वारस मुहुत्त गन्ने, इयरे चउ-वीस विरह उक्कोसो ॥ जम्म मरणे सुसमउं, ज-हन्नसखा सुरसमाणा ॥ २६१ ॥ सत्तमि महि ने-रइए, तेऊ वाऊ असख नर तिरिए ॥ मुत्तूण से-सजीवा उप्पज्जति नरनवम्मि ॥ २६२ ॥ सुर ने-रइएहिंचिय, हवति हरि अरिह चक्किवलदेवा ॥ चउविह सुर चक्किवला, वेमाणिय हुति हरि अरिहा ॥२६३॥ हरिणो मणुस्स रयणा, इ हुति नाणुत्तरेहिं देवेहिं ॥ जइ सन्नव मुववाउं, हयगय

एगिंदि-रयणाण ॥ २६४ ॥ वामपमाण चक्कं, छत्त दंडं दुहत्थय चम्म ॥ बत्तीसंगुल खग्गो, सुवण्णकागिणि चउरंगुलिया ॥ २६५ ॥ चउरंगुलो दुअंगुल, पिहुलोय मणी पुरोहि गय तुरया ॥ सेणावइ गाहावइ, वड्ढइ थी चक्कि रयणाइं ॥ २६६ ॥ चउरो आयुज गेहे भंडारे तिन्नि दुन्नि वेयड्ढे ॥ एगं रायगिहम्मिय, नियनयरे चेव चत्तारि ॥२६७॥ नो सप्पे पंडुए, पिंगलए सव्वरयण महपउमे ॥ कालेय महाकाले, माणव गया महासंखे ॥२६८॥ जंबुद्दीवे चउरो, सयाइं वीसुत्तराइं उक्कोस ॥ रयणाइं जहन्न पुण, हुंति विदेहम्मि छप्पण्णा॥२६९॥ चक्कं धणुहं खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला ॥ संखो सत्तइमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ॥ ॥ २७० ॥ संखनरा चउसुगइ, सु जंति पंचसु वि पढम संघयणे ॥ इग दुति जा अट्ठसय, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥ २७१ ॥ वीसि त्थि दसनपुंसग, पुरिसट्ठसय तुग्ग समएण ॥ सिज्झइ गिहिअन्न सलिंगे, ग चउदस अट्ठाहिय सय च ॥

॥ २७२ ॥ गुरु लहु मज्झिम दोचउ, अठसय उ-
ङ्कहो तिरि य लोए चउ वावीसऽठसय, दुसमुद्दे
तिन्नि सेसजले ॥ २७३ ॥ नरय तिरिया गयादस,
नरदेवगईउ वीस अठसय ॥ दसरयणा सक्कर वा,
लुयाउ चउ पक ऋ् दगउ ॥ २७३ ॥ उच्च वण-
स्सइ दस तिरि, तिरि छि दस मणुय वीस ना-
रीउ ॥ असुराइ वतरा दस, पण तद्देवीउ पत्तेय
॥ २७५ ॥ जोइ दस देविवीस विमाणियठसय
वीसदेवीउ ॥ तह पुवेएहिंतो, पुरिसोहोऊण अ-
ठसय ॥ २७६ ॥ सेसठ्ठगएसु, दसदस सिझति
एगसमएण ॥ विरहो ठमास गुरुउ, लहु समउ
चवणमिह नत्थि ॥ २७७ ॥ अऋ सग ठ पच चउ
ति, न्नि दुन्नि इक्को य सिज्झमाणेसु ॥ वत्तीसाइ-
सुसमया, निरतर अतर उवरिं ॥ २७८ ॥ वत्तीसा
अऋयाला, सठी बावत्तरो य बोधवा ॥ चुलसीई
उएणउई, दुरहियमठुत्तरसय च ॥ २७९ ॥ पणं-
याल लरकजोयण, विरकजा सिद्धिसिल फलिह
विमला ॥ तदुवरि गजोयणते, लोगतो तत्थ सि-

ऊठिई ॥ २०० ॥ बहुमज्झदेसन्नाए, अठेनय जोयणाइ बाहिल्ल ॥ चरिमंते सुय तणुई, अगुलसंखिज्जई न्नाग ॥ २०१ ॥ तिन्निसया तित्तीसा, धणुत्ति न्नागोय कोसठप्भागो ॥ ज परमोगाहणाय, तते कोसस्स ठप्भागो ॥ २०२ ॥ एगा य होइ रयणी, अठेनय अगुलेहिं साहीया ॥ एसा खलु सिद्धाण, जहण्ण उंगाहणा नणिया ॥ २०३ ॥ मणुयदार समत्त ॥ तिरियदारं नणइ ॥ वावीस सग ति दस वा स सहस गिणि तिदिण बेइंदियाईसु ॥ बारस नामुण पण दिण, ठम्मास तिपलिय ठिई जिहा ॥ २०४ ॥ सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्कराय खर पुढवी ॥ इग बार चउदसोलस, ठारस बावीस समसहसा ॥ २०५ ॥ गप्भ नुय जलयरो नय, गप्भोरग पुव्व कोडि उक्कोसा ॥ गप्भचउप्पय पक्खिसु, तिपलिय पलियाअसखसो ॥ २०६ ॥ पुव्वस्स उपरिमाण, सय्यरि-खलु वास कोडि लख्काय ॥ ठप्पण्ण च सहस्सा, बोधव्वा वासकोडीणं ॥ २०७ ॥ समुछिम-

पणिंदि थलखयर, उरग नूयगा जिठ ठिइ कम-
सो ॥ वास सहस्सा चुलसी, विसत्तरि तिपण्ण बा-
याला ॥२७७॥ एसा पुढवाईण, नव ठिईसपयतु
कायठिई ॥ चउ एगिदिसु णेया, उसप्पिणीउ
असंखिज्जा ॥२७७॥ ताउ वणमित्र्मणंता, संखिज्जा
वास सहस विगलेसु ॥ पचिंदि तिरिनरेसु, सतठ
नवाउ उक्कोसा, ॥२७०॥ सव्वेसिंपि जहण्णा, अंत
मुहुत्त नवेय काए य ॥ जोयण सहस्स महिय, ए-
गिंदिय देह मुक्कोस,॥२७१॥ वि ति चउरिंदिसरीरं,
बारस जोयण तिकोस चउकोस॥जोयण सहस्सप-
णिंदिय, उहे वुच्छ विसेसतु ॥२७२॥ अंगुल असंख
नागो, सुहुम निगोउ असंख गुणवाऊ ॥ तो अ-
गणितउ आऊ, तत्तो सुहुमा नवेपुढवी ॥२७३॥
तो बायर वाऊ गणी, आऊ पुढवी निगोय अणुक-
मसो ॥ पत्तेयवणसरीरं, अहिय जोयणसहस्सतु
॥२७४॥उस्सेहंगुलजोयण,सहस्समाणं जलासए ने
या॥त वल्लि पउम पमुह, अउ पर पुढविरूवतु॥२७५॥
बारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मीय जोयण

ञमरो ॥ मुठिम चउपयजुयगुरग, गाऊयणु जो-
यण पहुत्त ॥ २९६ ॥ गम्न चउप्पय ठग्गा, उयाइ
ञुयगाउ गाउय पुहुत्तं ॥ जोयण सहस्स मुरगा,
मह्ना उजए विय सहस्स ॥ २९७ ॥ पक्खि दुग
धणुपुहुत्त, सव्वाणगुलअसखभागलहू ॥ विरहो वि
गला सन्नी, ण जम्म मरणेसुअतमुहू ॥ २९८ ॥
गप्न्ने मुहुत्त वारस, गुरुउ लहु समय सखसुर
तुल्ला ॥ अणुसमय मसखिज्जा, एगिदिय हुतिय
चवति ॥ २९९ ॥ वणकाउ अणता, इक्किकाउ
वि ज निगोयाउ ॥ निच्चमसखो नागो, अणत-
जीवो चयइ एइ ॥ ३०० ॥ गोलाय असखिज्जा,
असख निग्गोयउ हवइ गोलो ॥इक्किक्कमि निगोए,
अणत जीवा मुणेयव्वा ॥ ३०१ ॥ अत्थि अणता
जीवा, जेहि न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उप्प-
ज्जति चयति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेवा ॥ ३०२ ॥
सव्वोवि किसलउ खलु, उगाममाणो अणतउ न-
णिउ ॥ सोचेव विवहूतो, होइ परित्तो अणतो
वा ॥ ३०३ ॥ जया मोहोदउ तिव्वो, अन्नाण

महप्ज्जय ॥ पेलव वेयणीय तु, तया एगिदियत्त-
ण ॥ ३०४ ॥ तिरिएसु जंति ससा, उतिरिनिरा-
ऊाडु कप्पदेवाउं ॥ पज्जत्तसख गप्जय, बायर
भूदगपरित्तेसु ॥३०५॥ तो सहसारतसुरा, निरया
पज्जत्तसख गप्जेसु ॥ सखपणिदिय तिरिया म-
णुि चउसु वि गइसु जंति ॥ ३०६ ॥ थावर वि-
गला नियमा, सखाउ य तिरि नरेसु गच्छंति ॥
विगला लभिज्जविरइ, सम्मपि न तेउ वाउ चुया
॥३०७॥ पुढवी दग परितवणा, बायर पज्जत्त
हुति चउलेसा ॥ गप्जय तिरिय नराण, छल्लेसा
तिणिसेसाण ॥ ३०८ ॥ अंतमुहुत्तमिगए, अंत-
मुहुत्तमिसेसए चेव ॥ लेसाहिंपरिणयाहिं, जीवा-
वच्चंति परलोय ॥ ३०९ ॥ तिरिनरआगामि भवे,
लेस्साए अइ गए सुरा निरया ॥ पुव्वभव ले-
स्ससेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिंति ॥ ३१० ॥ अंत-
मुहुत्तठिइउं, तिरिय नराण हवति लेस्साउं ॥ च-
रिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्वकोमीवि ॥३११॥
तिरियाण वि ठिइपमुह, भणिय मसेसपि सपई

वुह ॥ अनिंदिय दारमिंदिय, चउगइ जीवाण सामएण ॥ ३१२ ॥ देवा असख नर तिरि, इत्थीपु वेय गप्भ नर तिरिया॥ सखाउया तिवेया, नपुसगा नारयाईया ॥ ३१३ ॥ आयगुलेण वत्थु, सरीरमुस्सेह अगुलेण तहा ॥ नग पुढवि विमाणाई, मिणसु पमाणगुलेण तु ॥३१४॥ सत्थेण सुतिक्खेण वि, छित्तु भित्तु च ज किर न सक्का ॥ त परमाणु सिद्धा, वयतिआइ पमाणाण ॥ ३१५ ॥ परमाणू तसरेणू, रहरेणू वालअग्गलिक्खा य ॥ जूय जवो अठगुणो, कमेण उस्सेह अगुलय ॥ ३१६ ॥ अगुलछक्क पाउ, सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो ॥ चउहत्थ धणु दु सहस, कोसो ते जोयण चउरो ॥ ३१७ ॥ चउसयगुण पमाण, गुलमुस्सेहगुलाउ बोधव्व ॥ उस्सेहगुलदुगुण वीरस्सायगुल भणियं ॥ ३१८ ॥ पुढवाइसु पत्तेय, सग वणपत्तेय णतदस चउद ॥ विगले दु दु सुर नारय, तिरि चउ चउ चउदस नरेसु ॥ ३१९ ॥ जोणीण हुति लक्खा, सव्वे चु... ... विप्पति ॥ ३२०

गत्तेणेव सामन्ना ॥ ३२० ॥ एगिंदिएसु पचसु, बार मग तिसत्त अठवीसा य ॥ विगलेसु सत्त अम नव, जल खह चउपय उरग भुयगे ॥३२१॥ अद्धतेरस वारस, दस दस नवग नरामरे निरए ॥ वारस छवीस पणविस, हुति कुले कोडि लक्खाइ ॥ ३२२ ॥ इग कोडि सत्तणवई, लक्खा सड्ढा कुलाण कोडीण ॥ सवुड जोणि सुरेगिं, दि नारया वियड विगल गप्भु भया ॥ ३२३ ॥ अचित्त जोणि सुरनिरय, मीसगप्भे तिभेय सेसाण ॥ सी उसिण निरय सुर गप्भ, मीसत्ते, उसिण सेस तिहा ॥३२४॥ हय गप्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जायति ॥ अरिह हरि चक्किरामा, वसी पत्ताइ सेसनरा ॥ ३२५ ॥ आउस्स वधकालो, अबाह कालोय अत समउ य॥ अपवत्तण णपवत्तण, उवक्कम णुवक्कमा भणिया ॥३२६॥ वधति देव नारय, असख नर तिरि छमास सेसाऊ ॥ परभविया ऊसेसा, निरुवक्कमतिभागसेसाउ ॥३२७॥ सोवक्कमा उया पुण, सेसतिभागे अहव नवम-

न्नागे ॥ सत्तावीस ऽमे वा अतमुहुत्त तिमे वा वि ॥ ३२८ ॥ जइमे न्नागे बधो, आउस्स नवे अवाकालो सो ॥ अतेउजुगइ ऽग सम, य वक्क चउ पच समयता ॥ ३२९ ॥ उज्जु गइ पढम समए, परन्नविय आउय तहा हारो ॥ वक्काइ बीय समए, परन्नवियाउ उदयमेई ॥ ३३० ॥ ऽग ऽु ति चउ वक्कासु, ऽुगाइ समएसु परन्नवाहारो ॥ ऽुग वक्काइ सु समया, ऽग दो तिन्नी अणाहारा ॥ ॥ ३३१ ॥ बहुकाल वेयणिज्जा, कम्म अप्पेण जमिह कालेण ॥ वेऽज्जाऽ जुगवचिय, उइन्न सवप्पएसग्ग ॥ ३३२ ॥ अपवत्तणिज्जमेय, आउ अहवा असेसकम्मपि ॥ बध समएविबद्ध, सिढिल चिय त जहाजोग ॥ ३३३ ॥ ज पुण गाढ निकायण, बधेण पुव्वमेव किल बद्ध ॥ त होइ अणपवत्तण, जुग्ग कम वेयणिज्ज फल ॥ ३३४ ॥ उत्तम चरम सरीरा, सुर नेरइया असख नर तिरिया ॥ हुति निरुवक्कमाउ, ऽुहावि सेसा मुणेयव्वा ॥ ३३५ ॥ ऊणाउ मुवकमि जऽ, अप्पसमुद्धेण इयर गेणावि

॥ सो अज्झवसाणाई उवक्कम णुवक्कमो इयरो ॥ ॥ ३३६ ॥ अज्झवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ॥ फासेआणा पाणू, सत्तविह् झिज्जए आउ ॥ ३३७ ॥ आहार सरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भासमणे ॥ चउ पंच पच छप्पिय, इग विगला सन्नि सन्नीण ॥ ३३८ ॥ आहारसरीरिंदिय, ऊसास वऊ मणोऽभिनिव्वत्ती ॥ होइ जओ दलियाओ, करण पइसाउ पज्जत्ती ॥ ३३९ ॥ पण इदिय तिबलूसा, साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ ॥ इग दु ति चउरिंदीण, असन्नि सन्नीण नव दस य ॥ ३४० ॥ आहारे भय मेहुण, परिग्गहा कोह माण माया य ॥ लोभे ओहे लोगे, दस सण्णा हुंति सव्वेसिं ॥ ३४१ ॥ सुह दुह मोहा सन्ना, वितिगिच्छा चउदमा मुणेयव्वा ॥ सोए तह धम्म सणा, सोल समा हवइ मणुएसु ॥ ३४२ ॥ सखित्तासघयणी, गुरुतर सघयणि मज्झओ एसा ॥ सिरि सिरि चद मुणिंदे, ण निम्मिया अप्प पढणट्ठा ॥ ३४३ ॥ सखित्तयरीउ इमा, सरीरमोगो–

हणा य सघयणा ॥ सन्ना संठाण कसा, य लेसिं-
दिय डु समुग्धाया ॥ ३४४ ॥ दिठ्ठी दसण नाणे,
जोगुवउगो ववाय चवण ठिई ॥ पज्जत्ति किमा-
हारे, सन्निगई आगई वेए ॥३४५॥ तिरिया म-
णुया काया, तह गावीया चउक्कगा चउरो ॥ देवा
नेरइया वा, अठारस चावरासीउं ॥ ३४६ ॥ एगा
कोमी सत सठि, लक्का सतहुत्तरी सहस्साय ॥
दोय सया सोलहिया, आवलियाण मुहुत्तमि
॥ ३४७ ॥ पणसठि सहस पणसय, छत्तीसा इग
मुहुत्त खुड्डभवा ॥ दोय सया छप्पन्ना, आवलिया
एग खुड्डभवे ॥ ३४८ ॥ मलहारि हेमसूरि, ण
सोसलेसेण विरइयं सम्मं ॥ सघयणि रयण मेयं,
नदउ जा वीरजिण तित्र ॥ ३४९ ॥ इति श्री
त्रैलोक्यदीपिका नामसग्रहणीसपुर्णा ॥

॥ अथ श्री अभव्य कुलकम् लिख्यते ॥

जह अभविय जीवेहिं, न फासिया एव
माइया भावा ॥ इदत्तमनुत्तरसुर, सिलायनर

नारयत्त च ॥ १ ॥ केवलिगणहरहद्धे, पव्वज्जा तिछ्वछुर दाण ॥ पवयण सुरी सुरत्तं, लोगतिय देवसामित्त ॥ २ ॥ तायत्तीससुरत्त, परमाहम्मिय जुयलमणुयत्त ॥ सन्निन्नसोय तह्, पुव्वऽरा हारय पुलायत्त ॥ ३ ॥ मडनाणाइसुलद्धी, सुपत्तदाण समाहिमरणत्त ॥ चारण डुग महुसिप्पय, खीरासव खीणठाणत्त ॥ ४ ॥ तिछयर तिछपडिमा, तणु परिजोगाइ कारणेवि पुणो ॥ पुढवाइय जावमिवि, अजव्वजीवेहि नो पत्त ॥ ५ ॥ चउदस रयणत्तपि, पत्त न पुणो विमाणसामित्त ॥ सम्मत्त नाण संयम, तवाइ जावा न जावडुगे ॥ ६ ॥ अणुजवजुत्ता जत्ती, जीणाण साहम्मियाण वद्धल्ल ॥ नय साहेइ अजव्वो, सविग्गत्त न सुप्पक्ख ॥ ७ ॥ जिणजणय जणणि जाया, जिणजक्खा जक्खणी जुगपहाणा ॥ आयरियपयाइ दसग, परमछ गुणह्व मप्पत्त ॥ ८ ॥ अणुवध हेउ सरूवा, तछ अहिंसा तिहा जिणुदिठा ॥ दव्वेणय जावेणय, डुहावि तेसिं न सपत्ता ॥ ए ॥

॥ अथ श्री पुण्यकुलकम् ५५ बोल ॥

संपुन्न इंदियत्त, माणुसत्त च आयरिय खित्त
॥जाइ कुल जिणधम्मो, लब्भति पभूय पुन्नेहिं॥१॥
जिण चलणकमल सेवा,सुगुरुपायपज्जुवासण चेव॥
सज्झाय वाय वग्गत्त, लब्भति पभूयपुन्नेहि ॥ २ ॥
सुद्धो बोहो सुगुरुहिं, सगमो उवसम दयालुत्त ॥
दाखिन्न करणज, लब्भति पभूयपुन्नेहि ॥ ३ ॥
समत्त निच्चलत्त, वयाण परिपालण अमायत्त ॥
पढणं गुणण विणउं, लब्भति पभूयपुन्नेहि ॥४॥
उस्सग्गे अववाये, निच्छह् विवहारमि निउणत्त ॥
मणवयणकायसुद्धी, लब्भति पभूयपुन्नेहिं ॥ ५॥
अनियारं तारुन्न, जिणाण राउं परोवियारत्त ॥
निक्कपयाय जाणे, लब्भति पभूयपुन्नेहि ॥ ६ ॥
परनिंदापरिहारो, अप्पससा अत्तणो गुणाण च ॥
संवेगो निव्वेओ, लब्भति पभूयपुन्नेहिं ॥ ७ ॥
निम्मलसीलाब्भासो, दाणुल्हासो विवेगसवासो ॥
चउगई दुह सतासो, लब्भति पभूयपुन्नेहि ॥ ८ ॥

नारयत्त च ॥ १ ॥ केवलिगणहरदक्खे, पवज्जा तिच्छवच्छर दाण ॥ पवयण सुरी सुरत्त, लोगंतिय देवसामित्तं ॥ २ ॥ तायत्तीससुरत्त, परमाहम्मिय जुयलमणुयत्त॥ सन्निन्नसोय तह, पुव्वऊरा हारय पुलायत्त ॥ ३ ॥ मइनाणाइसुलद्धी, सुपत्तदाण समाहिमरणत्त ॥ चारण दुग मह्रुसिप्पय, खीरासव खीणज्झाणत्त ॥ ४ ॥ तिच्छयर तिच्छपडिमा, तणु परिज्जोगाइ कारणेवि पुणो ॥ पुढवाइय ज्ञावमिवि, अजव्वजीवेहिं नो पत्त ॥ ५ ॥ चउदस रयणत्तपि, पत्त न पुणो विमाणसामित्त ॥ सम्मत्त नाण सयम, तवाइ ज्ञावा न ज्ञावदुगे ॥ ६ ॥ अणुज्ञवज्जुत्ता ज्ञत्ती, जीणाण साहम्मियाण वच्छल्ल ॥ नय साहेइ अज्ञव्वो, सविग्गत्त न सुप्पक्ख ॥ ७ ॥ जिणजणय जणणि जाया, जिणजक्खा जक्खणी जुगपहाणा ॥ आयरियपयाइ दसग, परमछ गुणछ मप्पत्त ॥ ८ ॥ अणुवध हेउ सरूवा, तह अहिंसा तिहा जिणुद्दिट्ठा ॥ दव्वेणय ज्ञावेणय, दुहावि तेसिं न सपत्ता ॥ ९ ॥

॥ ५ ॥ दसलखअसीय सहसा, मुहुत्त सगाय होइ वास सए ॥ जइ सामाइयसहिर्ज, एगोविअला इमो लाहो ॥ ६ ॥ बाणवय कोमीर्ज, लरका गुण-सठि सहस पणवीस ॥ नवसय पणवील जूआ, सतिहा अरूनाग पलिअस्स ॥ ७ ॥ वाससए घमिआण, लखिगवीस सहस्स तह सही ॥ एगा-विय धम्म जुआ, जइ ता लाहो इमो होइ ॥ ८ ॥ गयाल कोमी गुणतीस–लरक गासठी सहस्स-सयनवग ॥ तेसठी किन्नूणा, सुरार्ज बधोई इग-घमिए ॥ ए ॥ सठी अहोरत्तेण, घमीआर्ज जस्स जंति पुरिसस्स ॥ निअमेणवि रहीआर्ज, सो दियहर्ज निप्फलोतस्स ॥ १० ॥ चत्तारीअ कोमि-सया, कोमीर्ज सतलरक अमयाला ॥ चालीस च सहस्सा, वाससय हुंती ऊसासा ॥ ११ ॥ इको विय ऊसासो, नय रहिर्ज होई पूण्यपावेहिं ॥ जइ पुणेण सहिर्ज, एगोविअ ता इमो लाहो ॥ १२ ॥ लरक इग सहस पण चत्त, चउसया अठ चेव पलियाई ॥ किचूणा चउनागा, सुरार्ज बधो ईगु-

दुक्कड गरिहा सुक्कडा–णु मोयण पायछित्त तव चरण ॥ सुह्र झाण नमुक्कारो, लब्जति पभूयपुन्नेहिं ॥ ९ ॥ इय गुणमणिज्जडारो, सामग्गी पाविउण जेणकर्ड ॥ विछिन्नमोहपासा, लहंति ते सासय सुरक ॥ १० ॥

॥ अथ श्री पुण्यपाप कुलकम् ॥

बत्तीस दिन सहसा, वाससए होइ आउ परिमाण ॥ जिप्जत पईसमय, पिछउं धम्ममि जइअव ॥ १ ॥ जइ पोसहसहीउं, तवनियमगुणेहिं गमइ एगदिण ॥ ता वधइ देवाउ, इतिअ मित्ताइ पलियाइ ॥ २ ॥ सगवीसकोडी सया, सतहत्तरी कोडिलरक सहसाय ॥ सत्तसया सतहुत्तरि, नव-भागा सत्त पलियस्स ॥ ३ ॥ अठासीई सहस्सा, वाससए दुन्नि लक्क पहराण ॥ एगोविअ जइ पहरो, धम्मजुउं ता इमो लाहो ॥ ४ ॥ तिसय सग चत्त कोडि, लक्कागारीस सहस बावीन्ना ॥ दुसय दुवीस दुभागा, सुराउ वधोय इगपहरे

माउं ॥ माया नयकिंसरणतु सचं, लोहो डुहो किंसुहमाहतुठी ॥ ४ ॥ वुद्धिअचम नयए वीणोय, कुरू कुशीलनयण अकित्ती ॥ सन्निनचित नयए अलत्री, सचेठीय सनयए सिरीय ॥ ५ ॥ चयंति मित्ताणि नर कयग्घं, चयंति पावाइ मुणिं जयत॥ चयति सुक्काणिसराणिहंसा, चवइ वुद्धीकुवियमणुस्स ॥ ६ ॥ असपहारे कहिए निलावो, अईपयत्येकहिअे विलावो ॥ निरिकतचित्ते कहिएविलावो, वहु कुसीसेकहिएविलावो ॥ ७ ॥ डुठा हीवा दरूपरा हवति, विज्ञाहरा मतपरा हवति॥ मुरका नरा कोवपरा हवति, सुसाहुणो तत्तपरा हवति ॥ ८ ॥ सोहा नवे उग्गतवस्स खती, समाहिजोगो पसमस्ससोहा ॥ नाण सुझाण चरणस्ससोहा, सीलस्स सोहा विणएपवित्ती ॥ ए ॥ अञ्चूसणोसोहइ वन्नयारी, अकिंचणो सोहइ दिरकधारी ॥ वुद्धिजुउं सोहइ रायमती, लज्जाजुउं सोहइ एगपत्ति॥ १० ॥ अप्पाअरीहोइअणवट्ठियस्स, अप्पा जसो सीलमउंनरस्स ॥ अप्पाडुरप्पा

सासे ॥ १३ ॥ एगुणवीस लक्खा, तेसठी सहस्स दुसय सत्तठी ॥ पलियाइ देवाउ, बधइ नवकार उस्सगो ॥ १४ ॥ लक्खिगसठी पणती–स सहस दुसय दस पलिअ देवाउ ॥ बधइ अहिअ जीवो, पणवीसुसास उस्सगो ॥ १५ ॥ एवं पावई परायाण, हवेउ निरयाउ अस्स बधो वि ॥ इअ नाउ सिरि जिण कि–त्तिअंमि धम्ममि उज्जमकुणह ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री गौतमकुलकम् लिख्यते ॥

लुद्धानरा अत्थपरा हवति, मूढा नरा कामपरा हवति ॥ वुद्धानरा खतिपरा हवति, मिस्सा नरा तिनिवि आयरति ॥ १ ॥ ते पंडिया जे विरया विरोहे, ते साहुणो जे समयचरति ॥ ते सत्तिणो जे न चयति धम्म, ते बधवा जे वसणे हवति ॥ २ ॥ कोहाभिभूआ न सुह लहति, माणसीणो सोयपराहवति ॥ मायाविणो हुति परस्सपेसा लुद्धामहिच्छानरयउविति ॥ ३ ॥ कोहो विस किं अमयअहिसा, माणोअरीकिं हियमप्प-

रनासो॥ तहा परत्थीसु पसत्तयस्स, सव्वस्स नासो अहमा गईय॥१८॥ दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खती, इत्रा निरोहोऽ सुहोइयस्स ॥ तारुन्नए इंदिय निग्गहो य, चत्तारि एयाणि सुदुक्कराणि ॥ १९॥ असासय जीवियमाहु लोए, धम्मचरे साहुजिणो-वइठ्ठ ॥ धम्मा य ताण सरण गई य, धम्म निसे-वित्तुसुहं लहति ॥ २० ॥

॥ अथ श्री दानकुलकम् लिख्यते ॥

परिहरिय रज्जसारो, उप्पाडियसजमिक्कगुरु भारो॥ खधाउ देवदूस, वियरतो जयउ वीरजिणो ॥ १ ॥ धम्मत्थ कामभेया, तिविह दाण जयमि विक्खाय ॥ तहवि य जिणदमुणिणो, धम्मिय-दाण पससति ॥ २ ॥ दाण सोहग्गकर, दाण आरुग्गकारण परम॥ दाण भोग निहाण,दाण ठाण गुणगुणार्ण ॥ ३ ॥ दाणेण फुरइ कित्ती, दाणेण य होइ निम्मला कती ॥ दाणावज्जिय हियउ, वयरी वि हु पाणियं वहइ ॥ ४ ॥ धणसत्थवाह-

छणवठियस्स, अप्पाजीअप्पा सरणं गईय ॥११॥
न धम्मकज्ञा परमत्थि कज्ञ, न पाणिहिंसा परम
अकज्ञं ॥ न पेमरागा परमत्थि वधो, न वोहि·
लाभा परमत्थिलाभो ॥ १२ ॥ न सेवियव्वा
पमया परक्का, न सेवियव्वा पुरिसा अविज्ञा ॥ न
सेवियव्वा अहिमाणी हिणा, न सेवियव्वा
पिसुणा मणुस्सा ॥ १३ ॥ जे धम्मिया ते
खलुसेवियव्वा, जे पम्यिा ते खलु पूछियव्वा ॥ जे
साहुणोतेअजिवदियव्वा, जे निम्ममा ते पम्सिला·
जियव्वा॥ १४ ॥ पुत्ताय सीलाय समविजत्ता, रिसी
य देवाय सम निजत्ता ॥ मुरकातिरिक्काय सम
विजत्ता, मुआदरिद्दाय सम विजत्ता ॥ १५ ॥
सव्वाकलाधम्मकला जिणाड, सव्वाकहाधम्मकहा
जिणाड ॥ सव्व वल धम्मवल जिणाड, सव्व सुह
धम्मसुह जिणाइ ॥ १६॥ जूए पसत्तस्स धणस्स
नासो, मस पसत्तस्स दयाइनासो ॥ मज्ञपसत्तस्स
जसस्स नासो, वेसा पसत्तस्स कुलस्स नासो ॥१७॥
हिंसा पसत्तस्स सुधम्मनासो, चोरीपसत्तस्स सरी·

रनासो॥ तह्रा परत्थीसु पसत्तयस्स, सव्वस्स नासो अहमा गईय॥१८॥दाण दरिद्दस्स पहुस्स खती, इन्ना निरोहोइ सुहोइयस्स ॥ तारुन्नए इदिय निग्गहो य, चत्तारि एयाणि सुदुक्कराणि॥१९॥ असासय जीवियमाहु लोए, धम्मचरे साहुजिणो-वइठ ॥ धम्मा य ताण सरण गई य, धम्म निसे-वित्तुसुहं लहंति ॥२०॥

॥ अथ श्री दानकुलकम् लिख्यते ॥

परिहरिय रज्जसारो, उप्पाडियसजमिक्कगुरु-भारो॥खधाउ देवदूस, वियरतो जयउ वीरजिणो ॥१॥ धम्मत्थकामभेया, तिविह दाण जयमि विख्खाय ॥ तहवि य जिणदमुणिणो, धम्मिय-दाण पससति ॥२॥ दाण सोहग्गकर, दाण आरुग्गकारण परम॥ दाण भोगनिहाण,दाण ठाण गुणगुणाणं ॥३॥ दाणेण फुरइ कित्ती, दाणेण य होइ निम्मला कती ॥ दाणावज्जिय हियउ, वयरी वि हु पाणियं वहइ ॥४॥ धणसत्थवाह-

जम्मे, ज घयदाण कय सुसाहुण ॥ तक्कारणमुस-
ज्जिणो, तेलुक्कपियामहो जाओ ॥ ५ ॥ करुणाइ
दिन्न दाण, जम्मतर गहिय पुन्न किरियाण ॥
तिछयर चक्क रिद्धिं, सपत्तो सतिनाहोवि ॥ ६ ॥
पचसय साहु भोअण, दाणावज्जिय सुपुन्नपप्भारो
॥ अच्छरिय चरिय चरिअ, भरहो भरहाहिवो जाओ
॥ ७ ॥ मुल्ल विणावि दाउ, गिलाण पडिअरण
जोगवछूणि ॥ सिद्धोअ रयणकवल, चदणवणिणि-
ओवि तमि भवे ॥ ८ ॥ दाऊण खीर दाण, तवेण
सुसिअग साहुणो धणिअ ॥ जण जणिय चम-
क्कारो, सजाओ सालिभद्दोवि ॥ ९ ॥ जम्मतर
दाणाओ, उल्लसिया पुव्व कुसल झाणाओ ॥ कय-
उन्नो कयपुन्नो, भोगाण भायण जाओ ॥ १० ॥
घयपूस वत्थपूसा, महरिसिणो दोस लेस परिहीणा
॥ लद्धीइ सयल गच्छो, वग्गहगा सुग्गइ पत्ता ॥११॥
जीवतसामि पडिमाइ, सासण वियरिऊण भत्तीए
॥ पव्वईऊण सिद्धो, उदाइणो चरम रायरिसी
॥ १२ ॥ जिणहरमभियवसुहा, दाउ अणुकंपभ-

तिदाणाइ ॥ तिछपत्तावगरेहि, सपत्तो संपइराया ॥ १३ ॥ दाउ सद्धा सुद्धे, सुद्धे कुम्मासए महामुणिणो ॥ सिरि मूलदेव कुमरो, रज्जसिरि पाविउ गुरुई ॥ १४ ॥ अइदाण मुहर कविअण, विरइअ सय सख कव्व विहुरिअं ॥ विक्कमनरिंद चरिअ, अज्जवि लोए परिप्फुरइ ॥ १५ ॥ तियलोअ बंधवेहि, तप्भव चरिमेहिं जिणवरिंदेहि ॥ कय किच्चेहिवि दिन्न । सवच्छरिअ महादाणं ॥१६॥ सिरिसेयंसकुमारो, निस्सेयस सामिउ कह न होइ ॥ फासूअदाणपवाहो, पयासिउ जेण नरहंमि ॥ १७ ॥ कह सा न पसंसिज्जइ, चदणवाला जिणइदाणेण ॥ छम्मासिय तवतविउ, निव्वविउ जेहिं वीरजिणो ॥ १८ ॥ पढमाइ पारणाइ, अकरिंसु करंति तह करिस्संति ॥ अरिहता भगवंतो, जस्स घरे तेसि धुव सिद्धि ॥ १९ ॥ जिणभवणबिंबपुत्थय–संघसरूवेसु सत्तखित्तेसु ॥ ववियअधणंपि जायइ, सिवफलय महो अणतगुण ॥ २० ॥

॥ अथ श्री शीलकुलकम् लिख्यते ॥

सोहग्ग महा निहिणो, पाए पणमामि नेमिजिणवइणो ॥ बालेण ज्जुअबलेण, जणाद्दणो जेण निज्जिणिउं॥ १ ॥ सील उत्तम वित्त, सील जीवाण मगल परम ॥ सील दोहग्गहर, सील सुक्खाण कुलभवण ॥ २ ॥ सील धम्म निहाण, सील पावाण खमण भणिय ॥ सील जतुण जए, अकित्तिम मरण पवर ॥ ३ ॥ नरय दुवार निरुभण, कवाक्ष सपुक्ष सहोअर छाय ॥ सुरलोअधवलमदिर, आरुहणे पवरनिस्सेणिं ॥ ४ ॥ सिरि उग्गसेणधूआ, रायमई लहउ सीलवइ रेहिं ॥ गिरि विवर गउ जीए, रहनेमी ठाविउ मग्गे ॥ ५ ॥ पज्जलिउविहु जलणो, सीलपभावेण पाणिय हवइ ॥ सा जयउ जए सीआ, जीसे पयक्ष जसपक्षाया ॥ ६ ॥ चाउणिजलेण चपाए, जोइ उग्घाडिय दुवारतिय ॥ कस्स न हरेइ चित्त, तीय चरिय सुभद्दाए । ७॥ नदउ नमया सुदरि, सा सुचिर जोइ पालिय

सील ॥ गहिलत्तणपि काउ, सहिआय विम्हयणा विविहा ॥ ८ ॥ जइ कलावईए, जोसणरन्नमि रायचत्ताए ॥ ज सा सीलगुणेण, छिनग पुणन्नवा जाया ॥ ९ ॥ सीलवईए सील, सकइ सक्कोवि वन्निउ नेव ॥ रायनिउत्ता सचिवा, चउरोवि पवचिआ जीए ॥ १० ॥ सिरि वद्धमाण पहुणा, सुधम्मलाहुत्ति जीइ पट्ठविउ ॥ सा जयउ जए सुलसा, सारयससिविमलसीलगुणा ॥ ११ ॥ हरिहरबभपुरदर-मयभजणपचबाणबलदप्पो॥ लीलाइ जेण दलिउ, स थूलभद्दो दिसउ भद्द ॥ १२ ॥ मणहरतारुन्नभरे, पत्थिज्जतोवि तरुणि नियरेण ॥ सुरगिरिनिच्चलचित्तो, सो वयरमहारिसी जयउ ॥ १३ ॥ थुणिय तस्स न सक्का, सड्ढस्स सुदसणस्स गुणनिवहो॥ जो विसमसंकडेसुवि, पडिउवि अखडसीलधणो ॥ १४ ॥ सुदरि सुनद चिल्लणा, मणोरमा अजणा मिगावइआ ॥ जिणसासणसुपसिद्धा, महासइउ सुह दितु ॥ १५ ॥ अच्चकारिअचरिअं, सुणिऊणं को न धुणई किरसीस

जा अक्कमिअ सीला, निव्ववइ कयहिआविदढं ॥१६॥ निय मित्तं नियजाया, निय जणउं निय पियामहो वा वि॥ नियपुत्तोवि कुसीलो, न वल्लहो होइ लोआण ॥ १७॥ सव्वेसिंपि वयाण, जग्गाण अत्थि कोइ पडिआरो ॥ पक्कघडस्सव कन्ना, न होइ सील पुणो जग्ग ॥१८॥ वेआलजूअरक्खस –केसरिचित्तयगइदसप्पाण॥लीलाइ दलइ दप्प, पालतो निम्मल सील॥१९॥ जे केइ कम्ममुक्का, सिद्धा सिज्झति सिज्झिहिंति तहा॥सव्वसिं तेसि वल, विसालसीलस्स माहप्प ॥ २० ॥

॥ अथ श्री तपकुलकम् लिख्यते ॥

सो जयउ जुगाइजिणो, जस्ससे सोहए जडा-मउडो ॥ तवझाणग्गिपलित्तिय–कम्मिंधण धूम पत्तिव्व ॥ १ ॥ सवच्छरियतवेण, काउसग्गमि जो ठिउं जयव ॥ पूरियनिययपइन्नो, हरउ दुरिआइ बाहुवली ॥ २ ॥ अथिरपि थिर वक–पि उज्जुअं

ुह्लहंपि तह सुलहं ॥ डुस्सज्झंपि सुसय, तवेण
लपज्जए कज्जा ॥ ३ ॥ ठं ठठेण तवं, कुसमहं
पढम गणहरो जयव ॥ अक्खीणमहाणमोई, सि
गोअमसामिउ जयउ ॥ ४ ॥ उज्जाइ मयक्ष
तवमलखेलाइलद्धिसपन्नो॥ निछुअखवडिकई
सुवन्न कति पयासतो ॥ ५ ॥ गो वन गब्भ ईि
वन्नणि घायाड गुरुअ पावाड ॥ कायरी
पिव, तवेण सुद्धो दढपहारी ॥ ६ ॥ मरोति
तवो, तविउ ज नंदिसेण महरिसि ॥ सो
तेण पिउ, जाउ खयरी सहस्सा ॥ ७ ॥ तति
किंकरत्त, कुणति कुलजाइविरहियस्स ॥ तव
मतपन्नावेण, हरिकेसवलस्स वलिस्स ॥ ८ ॥
पमसयमेगपमेणं, एगेण घमेण लद्धाड ॥
ज किर कुणति मुणिणो, तक्कसतसमरू
फलं ॥ ए ॥ अनिआणस्स विहियस्स तविय-
स्स किं पससामो ॥ किज्जाइ जिणासो, निका-
इयाणंपि कम्माणं ॥ १० ॥ अकुकरतवकारी
जगगुरुणा कन्हपुठिएण ॥ वाहरिउ

महप्पा, समरिज्जाउ ढढणकुमारो ॥ ११ ॥ पङ्-
दिवस सत्तजणे, वहिऊणं गहियवीरजिणदिरका
॥ दुग्गाभिग्गहनिरउ, अज्जुणउ मालिउ सिद्धो
॥ १२ ॥ नंदीसररुअगेसुवि, सुरगिरिसिहरेसु एग-
फालाए ॥ जघाचारण मुणिणो, गच्छति तवप्प-
जावेण ॥ १३ ॥ सेणियपुरउ जेसिं, पससिअ सामिणा
तवोरूव ॥ ते धन्ना धन्नमुणि, दुन्नवि पचुत्तरे पत्ता
॥ १४ ॥ सुभिऊण तव सुदरि, कुमरीए अबि-
लाणि अणवरय ॥ सट्ठिवास सहस्सा, जण कस्स
न कपए हियय ॥ १५ ॥ ज विहिअमबिलतव,
बारस वरिसाइ सिवकुमारेण ॥ त दट्ठु जबुरूव,
बिम्हइउ कोणिउ राया ॥ १६ ॥ जिणकप्पिय
परिहारिअ, पडिमा पडिवन्न लदयाईण ॥ सोऊण
तवसरूव, को अन्नो वहउ तवगवं ॥ १७ ॥ मास-
द्धमासखवउ, बलजद्दो रूववपि हु विरत्तो ॥ सो
जयउ रन्नवासी, पडिबोहिअसावयसहस्सो ॥१८॥
थरहरिअ धर ऊलहलिय—सायर चलियसयल-
कुलसेल ॥ जमकासि जय विण्हु, सघकए त तवस्स